786 917

सय्येदना ताजुल उराफ़ा ग़ौसे जमाँ वली-ए-कामिल हज़रत अल्लामा

सय्यद मोहम्मद अब्दुल बसीर मियाँ उर्फ़ सरकार अल्लाह हू मियाँ

पीलीभीती रज़ियल्लाहु तआला अन्हू की हयाते मुबारका और आपकी उर्फ़ियत के जवाज़ पर मुशतमिल किताब

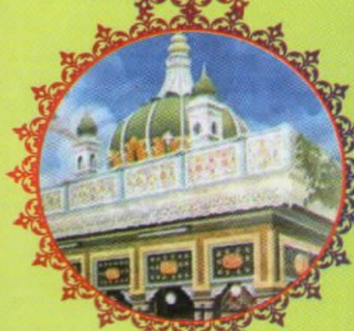

हयाते अल्लाह हू मियाँ

रदियल्लाहो तआला अन्हु

हस्बे इरशाद

सय्येदना हुजूर सिराजे आलम किबला

अज़

हुजूर शेरे अहले सुन्नत किबला

पेशकश

आसताना ए क़दीरिया
हुजूर मुजद्दिद मुरादाबादी
मोहल्ला नई बस्ती मुरादाबाद शरीफ़

22-8-2022

دم مدار
بیڑا پار
MADAARI MEDIA
The Silsila e Aaliya Madaariya Social Platform

سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح
سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں
سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات
سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جایئے

www.MadaariMedia.com

@MadaariMedia
@MadaariMedia
@MadaariMedia
@MadaariMedia

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari

या बसीरो 786 917 या क़दीरो

सय्येदना ताजुल उराफ़ा ग़ौसे जमाँ वली-ए-कामिल हज़रत अल्लामा शाह **सय्यद मोहम्मद अब्दुल बसीर मियाँ** उर्फ़ **सरकार अल्लाह हू मियाँ** पीलीभीती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हयाते मुबारका और आपकी उर्फ़ियत पर मुशतमिल किताब

हयाते अल्लाह हु मियाँ

हस्बे इरशाद

सय्येदना ताजुलफुक़हा हुजूर सिराजे आलम अल्लमा शाह

सय्यद मोहम्मद अबदुल अहद मियाँ किबला

सज्जादानशीन दरबारे हुजूर अल्लाह हू मियाँ पीलीभीत शरीफ़

अज़ क़लम

सय्येदना शेरे अहले सुन्नत हुजूर ख़तीबे आज़म अल्लमा मुफ़्ती

सय्यद मोहम्मद इन्तेसाब हुसैन

क़दीरी अशरफ़ी मदारी

सदर मरकज़े अहले सुन्नत अलजामिअतुल क़दीरिया पीलीभीत शरीफ़

सज्जादानशीन आसताना ए क़दीरिया हुज़ूर मुजद्दिद मुरादाबादी

मोहतमिम मरकज़े अहले सुन्नत जामिआ क़दीरिया मुरादाबाद शरीफ़

नाशिरीन

सय्यद मोहम्मद अलमआब हुसैन क़दीरी अशरफ़ी मदारी

सय्यद मोहम्मद एहतेसाब हुसैन क़दीरी अशरफ़ी मदारी

सय्यद मोहम्मद कामयाब हुसैन क़दीरी अशरफ़ी मदारी

क़दीरी मन्ज़िल मेहल्ला नई बस्ती मुरादाबाद शरीफ़ यू0पी0

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

इन्तेसाब

सय्यदना हुज़ूर ताजुल औलिया कुतबे ज़माँ सुल्तानुल आरेफ़ीन हज़रत अल्लामा मौलाना अल्हाज शाह

सय्यद मोहम्मद अब्दुल क़दीर मियाँ पीलीभीती

और

सय्यदना हुज़ूर क़िब्ला-ए-आलम शेखुल अरबे वल् अजम मुर्शिद मुहतरम शबीहे सय्यदना हुज़ूर ग़ौसे आज़म कुतुबे दौराँ हज़रत अल्लामा मौलाना अल्हाज शाह

सय्यद मोहम्मद अब्दुर्रशीद मियाँ

नबीरा-ए-सय्येदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ रज़ियल्लाहु अन्हुमा, पीलीभीत शरीफ़ के नाम

जिनके क़दमों की धूल माथे पर लगाकर एक मर्दे खुदा मुतर्जिम, मुफ़स्सिर, मुहद्दिस, मुजद्दिद, साहिबे तसानीफ़े कसीरा, तारीख़ी शाइरे दरबार रिसालत बन गया जिसको दुनिया

सय्यद मोहम्मद इन्तेख़ाब हुसैन क़दीरी अशरफ़ी मदारी

के नाम से जानती है ।

अबुल अेहतेसाब

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

मुकद्दमा

पिछले दिनों एक वहाट्स-एप ग्रुप में एक मौलाना साहब ने पूछा कि आप लोग अल्लाह हू मियाँ कहते हो और मुफ़्ती लोग इस नाम को कुफ्र या नाजाइज़ बताते हैं तब मैं सोचने पर मजबूर हो गया कि यह इस मौलाना की कमी नहीं बल्कि हमारी कमी है कि सरकार अल्लाह हू मियाँ रज़ियल्लाहु अन्हु का दुश्मन अपना काम बखूबी कर गया और हम ने उन फ़तवों को ख़ातिर ख़्वाह आम नहीं किया जिनमें एहले सुन्नत के जलीलुल्क़द्र हज़राते मुफ़्तियाने किराम ने अल्लाह हू मियाँ कहना जाईज़ लिखा है और कुफ़्र कहने वालों को जोहला के तब्क़े में डाला है ।

चुनांचि उसी दिन यह इरादा कर लिया कि सय्यदना ताजुल उराफ़ा ग़ौसे जमाँ वली-ए-कामिल हज़रत अल्लामा मौलाना शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुल बसीर मियाँ उर्फ सरकार अल्लाह हू मियाँ, पीलीभीती रज़ियल्लाह तआला अन्हु की उर्फ़ियत "अल्लाहू हू मियाँ" और आपके हालात पर एक जामे किताब ज़रूर तहरीर करूँगा और उसमें सारे फ़तवों को यकजा करूँगा जिसमें सरकार अल्लाहू मियाँ की उर्फ़ियत "अल्लाहू हू मियाँ" को जाईज़ क़रार दिया गया है।

इससे पहले जब पीलीभीत शरीफ के एक पागल मौलवी ने सरकार अल्लाहू मियाँ की उर्फ़ियत को निशाना बनाते हुए एक किताब बा उनवान "ज़ालिमाना जवाब" अवाम में फेंक कर गंदगी करने की कोशिश की तो वालिदे गिरामी सय्यदना अमीरे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन-ओ-मिल्लत हुज़ूर मुनाज़िरे आज़म अल्लामा मुफ़्ति सय्यद मोहम्मद इन्तेख़ाब हुसैन क़दीरी अशरफ़ी मदारी मुतरजिम मुफ़स्सिर व मुहद्दिस मुरादाबादी रज़ियल्लाहु अन्हु ने "दलाइले इन्तेख़ाब फ़ी रद्दे मुन्सिफ़ाना जवाब" तहरीर फ़रमाकर नापाक मौलवियों की

नापाक साजिशों को नाकाम बना दिया था और फिर 1999 ई० में हफ़्तरोज़ा "निदाए अहले सुन्नत" मुरादाबाद शरीफ के "सरकार अल्लाह हू मियाँ नम्बर के ज़रीए इन फ़तवों को आम फ़रमाया था, मगर "दलाइले इन्तेख़ाब" में सरकार अल्लाह हू मियाँ के हालात नहीं थे और सरकार अल्लाह हू मियाँ नम्बर लोगों के पास ज़्यादा दिन महफ़ूज़ नहीं रह सका।

नीज़ यह कि वह किताब और नम्बर सिर्फ़ उर्दू में थे और हमारा हिंदी पढ़ने वाला तबक़ा सरकार अल्लाह हू मियाँ की हयाते पाक पढ़ने से महरूम रह गया । लिहाज़ा "दलाइले इन्तेख़ाब" और "सरकार अल्लाह हू मियाँ नम्बर" से भरपूर इस्तेफ़ादा करते हुए मैंने इस किताब को उर्दू के साथ-साथ हिंदी में भी प्रकाशित करने का अज़्म किया ताकि अवाम इससे भरपूर फ़ायदा हासिल करें और सरकार अल्लाह हू मियाँ के दुश्मनों के मुंह पर ताला लगा सकें।

ख़ुदाए क़दीर जल मजदुहू अपने महबूबे पाक सय्येदना आला हज़रत इमामुल अम्बिया ए वल मुरसलीन मक्की मदनी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल हक़ीक़त को समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और "ठेकेदार लोगों" की ठेकेदारी और धोखेबाज़ी से अहले सुन्नत को महफ़ूज़ फ़रमाए ।

आमीन बिजाहे रहमतुल्लिल आलमीन व अलैहिस्सलातु वत्तसलीम

अबुल एहतेसाब वल कामियाब

सैय्यद मोहम्मद इन्तेसाब हुसैन

क़दीरी अशरफ़ी मदारी अफ़ा अनहुल बसीर

24 अगस्त 2017 ई

(नोट) वक्त की तंगी के सबब सरकार अल्लाह हू मियाँ की उर्फ़ियत के मुताअल्लिक़ फतवे सिर्फ़ उर्दू में पेश किये जा रहे हैं।

786 917

सय्येदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ की विलादते बा-सआदत और ज़माना-ए-तुफोलियत

अल्लाह तआला का एहसाने अज़ीम है कि हमें इस महान हस्ती का दामने करम हासिल है जिन का शुमार उन औलिया एकराम में है जो इरफान ही का नहीं बल्कि इल्म का भी समुद्र थे और वह ज़ाते गिरामी सय्येदना हुज़ूर ताजुल उरेफा ग़ौसे जमाँ हज़रत अल्लामा मौलाना शाह सैय्यद मोहम्मद अब्दुल बसीर मियाँ उर्फ़ सरकार अल्लाह हू मियाँ पीलीभीती, रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की है ।

सय्येदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विलादते-बा-सआदत 1379 हिजरी में तोरढ़ेर शरीफ़ ज़िला मरवान सूबा सरहद, पाकिस्तान में हुई । आपके चेहरा-ए-मुबारका से आसारे बुज़ुर्गी, पाकीज़गी, संजीदगी बचपन से ही ज़ाहिर थे और हर अहले नज़र को महसूस हो जाता था कि यह बच्चा अपने वक़्त में वली-ए-कामिल होगा और अपनी बुज़ुर्गी और फ़ियूज ज़ाहिरी व बातनी से आम लोगों को फ़ैज़ पहुँचाएगा । आप शुरू से ही खेल कूद, तमाशों से अलग रहकर यादे इलाही में मसरूफ़ रहते थे और जमींदार घराने के सदस्य होने के बावजूद शाने क़लंदरी बचपन में ही ज़ाहिर होने लगी थी ।

सय्येदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ की तालीम और तरबिय्यत

सय्येदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इब्तेदाई तालीम मौलाना गुलाब दीन मस्जिद तोरढ़ेर शरीफ़ के इमाम साहब के सुपुर्द हुई और एक हाफ़िज़े कुर'आने करीम से आपने कुर'आन की तालीम हासिल की । ग्यारह साल की उम्र शरीफ़ में आप "तोहफ़ा-ए-नसाइह" पढ़ने लगे और मस्जिदे गुलाब दीन में पढ़ते रहे। वालिदा माजिदा के इन्तेक़ाल के बाद कुछ अर्से तक तोरढ़ेर शरीफ़ में तालीम हासिल की और ज़िला पेशावर के मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर बग़र्ज़ तहसीले उलूमे दीनिया सफ़र किया और इसी ज़िले में उसूले फ़िक़ह फ़ारसी अरबी की तकमील हुई। आप अपने उस्तादों और हम-सबक़

तलाबा के साथ निहायत अदब और अख़लाक़ के साथ पेश आते थे। उनकी ख़िदमत और रज़ा-जोई को अपना फ़र्ज़ समझते थे और निहायत हर दिल अज़ीज़ रहते थे। जिस ज़माने में मौलाना लश्कर साहब के पास मक़ाम रुस्तम बज़ार में उसूलुशाशी आपके दर्स में थी तो क़रीब में एक शख़्स रबाब बजाने में निहायत सरगर्मी से मशगूल रहा करता था और इशा की नमाज़ के बाद से सुबह तक बजाता रहता था उसे देखकर आपके दिल में यह ख़्याल गुज़रा कि अगर इसी तरह मैं भी सारी रात मेहनत करके अपनी दरसी किताबों को हिफ़्ज़ कर लूं तो बहुत ज़यादा नफ़ा पहुँचेगा, यह ख़्याल करके आपने रात के अक्सर हिस्से में जागना शुरू फ़रमाया और दर्से निज़ामी की कुतूब को हिफ़्ज़ करना शुरू फरमा दिया। आप अपने हम सबक़ तलाबा से बहस-ओ-मुबाहिसे में हमेशा सबक़त ले जाते थे। आपने भारत में तशरीफ़ लाकर उलूमे तफ़ासीर व अहादीस की तकमील फरमाई और इसी सिलसिले में सहसपुर, स्योहारा ज़िला बिजनौर बांस बरेली में आपने दर्से निज़ामी की तकमील फ़रमाई। रामपुर के मदरसा आलिया और पीलीभीत शरीफ़ मदरसा पंजाबियान में भी कुछ अर्सा तालीम हासिल फरमाई।

आप रूहानियत के साथ साथ इल्म के भी पहाड़ थे। आपकी तसनीफ़ कर्दा बहुत सी कुतुब मतबूआ हैं और कुछ ग़ैर मतबूआ हैं। दर्सी कुतुब पर आपके हवाशी आज भी मौजूद हैं जो आपकी इल्मी सलाहियतों का जीता जागता सुबूत हैं।

मेरे वालिदे माजिद सय्येदना अमीर अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन-ओ-मिल्लत हुज़ूर मुनाज़िरे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सय्येदना शेख़ुल अरबे वल अजम हुज़ूर क़िबला-ए-आलम नबीरा ए सय्येदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के हवाले से इरशाद फरमाया कि रब्बे क़दीर ने सरकार अल्लाह हू मियाँ को ऐसी अज़ीम क़ुव्वते हाफ़िज़ा अता फरमाई थी कि जिस किताब को आप एक मर्तबा देख लेते उसे आप हिफ़्ज़ फरमा लिया करते, यही वजह है कि अज़ आमद नामा ता बुख़ारी शरीफ़ पूरा दर्से निज़ामी आपको हिफ़्ज़ था।

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

हम भी आलिम हैं और हज़ारों उलामा से हमारा राबता भी है, किसी को एक दो किताबें भी हिफ़्ज़ नहीं होती हैं मगर यह सरकार अल्लाह हू मियाँ की रूहानी ताक़त ही थी कि जिसने आपको ऐसी अज़ीम निराली आलिमाना शान अता फरमाई। और यह तो दुनिया जानती है कि नुतफ़ा अपना असर ज़रूर दिखाता है चुनांचि सरकार अल्लाह हू मियाँ की औलाद भी इल्म का पहाड़ है। चाहे वह हुज़ूर ताजुल औलिया हों या हुज़ूर क़िबला-ए- आ[illegible] व हुज़ूर सिराज आलम हों या उनके शहज़ादा-ए-वाला शान हुज़ूर ताजुल उलेमा। और हुज़ूर सिराजे आलम तो आलिमे दीन काज़ी -ए-शरऐ मतीन होने के साथ-साथ डबल एम. ए. भी हैं यानी इस घर का बच्चा बच्चा इल्म का समंद्र नज़र आ रहा है। और आज सिर्फ़ सरकार अल्लाह हू मियाँ के ख़ानदान ही में इल्म की रेल पेल नहीं है बल्कि दरबार सय्येदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ पीलीभीत शरीफ़ में मरकज़ अहले सुन्नत जामिआ क़दीरिया के रूप में इल्म का दरिया बह रहा है और आज पूरी दुनिया में सरकार अल्लाह हू मियाँ के फैज़ाने इल्मी का डंका बज रहा है।

रब्बे क़दीर का शुक्र है उसके महबूबे पाक का करम है कि आज सरकार अल्लाह हू मियाँ के गुलामों में इतने उलामा हैं जिनका शूमार कर पाना ना मुमकिन है और आज दुनिया भर के बेईमान इन गुलामाने सरकार अल्लाह हू मियाँ से नजरें मिलाने की जसारत नहीं कर पाते हैं।

यह सरकार अल्लाह हू मियाँ का फ़ैज़ाने इल्मी ही है कि आज उनके गुलामों में एक गुलाम मुतरजिमे कुर'आने करीम है, मुफ़स्सिर है, मुहद्दिस है, मुजद्दिद है। उन्हीं का गुलाम है जिसने तीन हज़ार नातें और मनकबतें लिखकर तारीख़ी कारनामा अंजाम दिया है।

तहारत ए जिस्मानी

आप हमेशा बा वुज़ू रहा करते थे । जमाना-ए-नाबालिगि में भी आप इसका ख़याल और लिहाज़ रखते थे, अपने वालिद साहब क़िबला के हुक्म से जब कभी खेतों पर जाने का इत्तेफ़ाक़ होता तो वज़ू के वास्ते कूज़ा साथ ले जाते, पाबन्दे सोम-ओ-सलात इतना थे कि आपकी कोई

भी नमीज़ क़ज़ा नहीं हुई। अगर पानी न मिला तो तयम्मुम से नमाज़ अदा फरमा ली और फिर जब पानी मिला तो उससे वुज़ू करके मुकर्रर अदा फरमा ली। एक बार वुज़ू का कूज़ा टूट गया तो आपने जब तक दूसरा कूज़ा नहीं मंगवाया खेत को नहीं गए ।

अकले हलाल

आपने हमेशा इस बात का लिहाज़ रखा कि किसी ना जाईज़ ज़रिए और तरीक़े से रोज़ी हासिल न की जाए, हत्ता कि एक मर्तबा जब पेशावर में अकाल पड़ा और ग़िज़ा की क़िल्लत हुई तो आप मुसलसल रोज़ा रखते और कभी इस तरह के खाने की तरफ़ इल्तेफ़ात न किया जो आम लोग तक़सीम करते थे ।

मशाग़िल

आप रोज़ाना एक बजे रात में बेदार होते थे और वुज़ू फ़रमाकर मराक़बे में मसरूफ़ हो जाते थे। तीन बजे तक हबसे दम फ़रमाया करते थे, उसके बाद नमाज़ तहज्जुद, ज़िक्र-ओ-फिक्र मराक़बे में मसरूफ़ रहते फिर नमाज़े फ़ज्र अदा करके क़सीदा-ए-ग़ौसिया शजरा ए मुबारक, अशआर ए हम्द-ओ-नात को जोशे मुहब्बत के साथ पढ़ते थे और इस्तेख़ारा पढ़कर तुलूए आफ़ताब तक मराक़बा फ़रमाते। फिर ताज़ा वुज़ू फ़रमा कर नमाज़े इशराक़ अदा करते थे और तिलावते क़ुर'आने पाक फरमाते थे। बादे तिलावत नाशता तनावुल फ़रमाते थे, सरकार अल्लाह हू मियाँ फरमाते थे कि हमने कभी खाने की तरफ़ ध्यान नहीं दिया ख़्वाह भूक से हमारी कालत कैसी ही क्यों न हो गई हो। बा-ज़मानाए तालिबे इल्मी इलाक़ा छज्जा की एक मस्जिद में 35 या 36 तालिबे इल्म रहते थे और सभी के लिये मोहल्ले के लोग खाना लाया करते थे एक बार रात में बहुत बारिश हो रही थी, बिजली चमक रही थी, कोई शख़्स खाना न ला सका आप अगरचे कमसिन थे तक़रीबन 12 या 13 साल की उम्र थी मगर हिम्मत फ़रमाकर चल दिये और जब बिजली कौंधती तो उसकी रोशनी में रास्ता देखते और चले जाते, ग़र्ज़ यह कि आपने उस अंधेरी रात में तूफान के बीच खाना इकट्ठा करके उन तलाबा को खिलाया।

अकसर आपका मामूल था कि अगर लोग आ जाते तो उन्हें नसीहत फ़रमाते वरना मराक़बे में मसरूफ़ रहते या कुतुबे तसव्वुफ़ व दीनियात का मुताला फ़रमाते और ग्यारह से एक बजे तक इसतराहत फरमाते थे और एक बजे के बाद वुज़ू फ़रमाते और मामूलात में मसरूफ़ हो जाते। आप नमाज़े ज़ोहर अदा करके फिर लोगों को वाअज़ ओ नसीहत फ़रमाते व कुतुबे दीनिया का मुताअला फरमाते। नमाज़े असर के बाद इस्तग़फ़ार पढ़ते उसके बाद मराक़बा फरमाते और अक्सर मज़ारात पर हाज़री दिया करते थे। बा-ज़मानाए क़्यामे वतन शरीफ़ सरकार गुल बाबा मियाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे मुक़द्दसा और क़्यामे पीलीभीत शरीफ़ के दौरान सरकार शाह जी मियाँ रजि अल्लाहु अन्हु के मज़ार शरीफ़ पर हाज़री के लिए जाते थे । नमाज़े मग़रिब अदा फ़रमाते और बाद नमाज़ कुछ नवाफ़िल अदा फरमाते। क़सीदा-ए-ग़ासिया और शजरा शरीफ़ भी पढ़ा करते थे इसके बाद मराक़बे में मसरूफ़ रहते। इसके बाद खाना तनावुल फ़रमाकर थोड़ा आराम फ़रमाते अगर लोग आ जाते तो वाअज़ ओ नसीहत फरमाते थे फिर नमाज़े इशा के बाद कुछ नवाफ़िल अदा फ़रमाते थे। सूराए मुल्क मय दरूद शरीफ़ पढ़ते फिर मराक़बे में मसरूफ़ होते। क़रीब ग्यारह बजे शब आराम फ़रमाते थे ।

औक़ाते मुक़र्ररा में अगर कोई साहब अपने घर ले जाने के वास्ते अर्ज़ करते तो आप अज़राए शफ़क़त तशरीफ़ ले जाते। विसाल शरीफ़ से तीन साल क़ब्ल आप बवक़्ते तनहाई इस्तग़फ़ार में मसरूफ़ रहते थे। यह मक़ाम ग़ौसियत का था।

आपको जिस ने जिस अन्दाज़ से भी देखा आप पीरे कामिल नज़र आए। पीर देखो तो सय्येदना हुज़ूर ताजुल फुक़रा ग़ौसुल अग़वास सरकार हाजी शाहजी मोहम्मद शेर मियाँ पीलीभीती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आपके पीर हैं जो खुद ही वली नहीं बल्कि वलीगर हैं जिस पर नज़र डाल दें अल्लाह का वली बना दें ।

औलाद देखो तो सय्येदना हुज़ूर ताजुल औलिया कुतुबे ज़माँ अल्लामा अल्हाज शाह सैय्यद मोहम्मद अब्दुल क़दीर मियाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

आपके साहबज़ादे हैं जिनसे चलते फिरते करामतों का ज़ुहूर होता था। पोता देखो तो सय्येदना हुज़ूर ताजुश्शुराफ़ा शेख़ उल अरबे वल अजम शबीहे सय्येदना हुज़ूर गौस आज़म सरकार क़िबला-ए-आलम अल्लामा अल्हाज शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुलर्रशीद मियाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं जिनकी करामतें सर आंखों से देखने वाला एक मैं ही नहीं हूँ बल्कि लाखों हैं।

एक क़दम और आगे बढ़ाऐं "पर पोता" देखें सय्येदना हुज़ूर ताजुल्फ़ुक़ाहा सिराज आलम अल्लामा अल्हाज क़ाज़ी सय्यद मोहम्मद अब्दुल अहद मियाँ क़िबला डबल एम.ए., जिन को देखकर एहसास होता है कि अल्लाह का वली कैसा होता है।

सय्येदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मन्सबे विलायत लफ़्ज़ों में बयान करना मुझ नाचीज़ के लिए मुशकिल ही नहीं नामुम्किन है, अल्बत्ता विलायत के इस समंद्र से कुछ मोतियों को अक़ीदत व मुहब्बत के धागे में पिरोकर नज़रे क़ारेईन करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ ।

सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ के ख़ानदानी हालात

सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ रज़ि अल्लाहु अन्हु के अजदाद में बड़े बड़े बा-करामत औलियाए किराम हैं चुनांचे आपके अजदाद में सय्येदना गुले गुलज़ार रूहानियत हुज़ूर सय्यद गुल मोहम्मद मियाँ उर्फ़ गुल बाबा मियाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गिरामी है जिनका फ़ैज़ आज भी ज़ाहिरी तौर जारी है। आपका मज़ारे मुक़द्दस तोरढ़ेर शरीफ़ ज़िला सवाबी में है। आप हाफ़िज़-ए-कुरआन थे। आपसे अक्सर करामतों का ज़हूर होता था आपने अपनी दुन्यावी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये काश्त का काम भी किया। आपने जिस ज़मींदार के यहाँ काम किया वहाँ एक ड्यूटी रात को भी होती थी जिसे सभी लोग बारी-बारी अंजाम देते थे। वह ड्यूटी थी खेत पर रात को गीदड़ भगाने की। सारे काम करने वाले अपनी बारी आने पर रात भर गीदड़ भगाते थे। मगर जब हुज़ूर गुल बाबा मियाँ की बारी होती तो आप हस्बे मामूल मस्जिद में जाकर इबादत में मशगूल हो जाते, जब जमींदार को यह पता चला कि

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

गुल मियाँ रखवाली नहीं करते बल्कि मस्जिद जाकर इबादत में मशगूल हो जाते हैं तो वे मुआएने के लिए आया और खेत पर पहुंचा तो देखा कि हज़रत सय्यद गुल बाबा मियाँ मस्जिद में मेहवे इबादत हैं और जो गीदड़ खेत में आता है और खेत चरने की कोशिश करता है और फ़सल को मुंह लगाता है तो वह मर जाता है। जमींदार और उसके दीगर साथियों ने जब यह करामत देखी और हुजूर गुल बाबा मियाँ का तसर्रूफ़ देखा तो सब अक़ीदतमन्द हो गए और आपका दिल की गहराईयों से सम्मान करने लगे। आपकी हयात-ए-तय्याबा में दूरदराज से बरस, कोढ़ और फोढ़े फुंसी के रोगी आते थे और शिफ़ायाब होकर जाते थे और आपका यह फ़ैज़ान बादे विसाल आज भी जारी है। आपके मज़ार शरीफ़ की मिट्टी कोढ़ियों के लिए ख़ाके शफ़ा का काम करती थी। अपकी बहुत करामातें हैं मगर एक करामत आप ज़रूर पढ़ लें ताकि आपको महबूबाने खुदा का मक़ाम समझ में आ सके। बादशाह अहमद शाह अबदाली जब मरहठों से जंग करने के इरादे से काबुल से पेशावर आए तो गांव चमकनी में हज़रत मियाँ मोहम्मद उमर साहब रहमतुल्ला अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि मरहठों की ताक़त बहुत ज़्यादा है मैं उनसे लड़ाई करने पानीपत मैदान जा रहा हूँ दुआ फ़रमायें कि अल्लाह मुझे कामयाबी अता फरमाए। हज़रत मियाँ मोहम्मद उमर साहब रहमतुल्ला अलैह ने फ़रमाया बेशक मैं दुआ करूंगा लेकिन आप तोरढ़ेर शरीफ़ ज़रूर तशरीफ़ ले जायें और वहाँ पर गुल बाबा मियाँ से दुआ कराएँ क्यों कि हज़रत गुल बाबा मियाँ आज पूरे हिन्दुस्तान के मुतासर्रिफ़ हैं, चुनांचि बादशाह तोरढ़ेर शरीफ़ हुजूर गुल मियाँ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उस वक़्त आप अपने खेत में मौजूद थे तो बादशाह ने दुआ के लिए दरख़्वास्त की तो हुजूर गुल बाबा मियाँ ने फ़रमाया कि मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ जाओ अल्लाह तआला तुम्हें फ़तहे अज़ीम अता फरमायेगा, आपने एक खुरपी अता कर दी और बादशाह से फ़रमाया जब लड़ाई सख़्त हो जाए तो इस खुरपी को दुशमन की फ़ौज की तरफ़ फेंक देना उसके बाद जब बादशाह पानीपत के मैदान में पहुंचा और लड़ाई काफ़ी

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

तूल पकड़ गई तो आख़िरकार बादशाह को वे खुरपी याद आई तो बादशाह ने खुरपी को दुशमन की फौज की ओर फेंका तो हज़ारों लोगों के सिर इस खुरपी से क़लम हुए और फिर अहमद शाह अबदाली की फ़ौज ने एक ज़बरदस्त हमला किया और दुशमन की सेना को जो लाखों की संख्या में थी अल्लाह के फ़ज़्ल-ओ-करम और हज़रत गुल बाबा मियाँ की दुआ से नेस्त ओ नाबूद हुई। बादशाह वापस काबुल से आ रहे थे तो उन्होंने पहले हुज़ूर गुल बाबा मियाँ की बारगाह तोरढ़ेर शरीफ़ में हाज़री दी और अर्ज़ किया कि हुज़ूर यह आपकी दुआ थी कि अल्लाह तआला ने हमें जीत दिलाई और बादशाह ने तोरढ़ेर शरीफ के इर्द गिर्द बहुत जायदाद आप को बतौरे नज़राना पेश की जो आज तक अपकी औलाद के पास मौजूद है ।

हुलया-ए-मुबारक

सरे मुबारक कलाँ, क़दे मुबारक बड़ा, पेशानिए इरफानी कुशादा, चश्मे चश्माए करम सरमगीं, भौहें आबरोए हया खुश क़तए रौशन, दहन इल्मो हिकमत के गौहर बरसाने वाला कुशादा, दनदान नूर के मोती कला, चमकदार। गोशे बाहोश बैज़ावी, रेश मुबारक घनी मानिन्दे हुज़ूर पुरनूर गौसे आज़म, रूख़्सार पुर अनवार सुर्ख़ चमकदार, गर्दन ऊँची, सीना-ए-मुबारक फराग़, दस्ते मुबारक दराज़, उंगली मौज़ू व खूबसूरत, नाखून बैज़ाबी सफैद सुरख़ी माईल, पाए मुबारक माईल ब दराज़ी, साक़ मुबारका बुलंद व मौज़ू।

सय्यदना हुजूर अल्लाहू मियाँ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिस महफिल में जलवा अफ़रोज़ होते अपने ज़ाहिरी और बातिनी हुस्न के बाइस महफिल से मुम्ता[illegible] नज़र आते जबकि तसन्नु और नुमाइश से आपका दूर का भी वास्ता न था, आपके तमाम औक़ात याद इलाही से मुज़य्यन थे। आपको तकल्लुफ़ की फुर्सत ही कहाँ थी मगर आपके चेहरे पर जमाल व रानाई का ऐसा पहरा था कि हर आने वाला पहली नज़र में महसूस कर लेता था कि यह हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ ही हैं, यही सय्यदना हुज़ूर शाह जी मियाँ के खलीफ़ा हैं।

सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ का शजरा ए नसब

सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ रज़ियल्लाहु अन्हु के सरे मुबारक पर जहां नियाबते रसूल का ज़रीं ताज था वहीं आपको आले रसूल और आले ग़ौसुलवरा होने का शर्फ़े अज़ीम हासिल था। आपको नजीबुत्तरफ़ैन सय्यद यानी हसनी और हुसैनी सय्यद होने का शरफ़ हासिल है और आपका शजरा ए नसब चन्द वास्तों से सय्यदना हुज़ूर ग़ौसे आज़म पीरे पीराँ मीरे मीराँ सरकार ग़ौस आज़म शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलता है। अपका शजरा शरीफ़ इस तरह है: (1) सय्यदना हुज़ूर सय्यद मोहम्मद अब्दुल बसीर मियाँ उर्फ़ अल्लाह हू मियाँ (2) सय्यदना हुज़ूर सय्यद रहीमुल्ल्लाह मियाँ (3) सय्यदना हुज़ूर सय्यद मआज़ल्लाह मियाँ (4) सय्यदना हुज़ूर सय्यद हबीबुल्लाह मियाँ (5)सय्यदना हुज़ूर सय्यद जान मोहम्मद मियाँ (6) सय्यदना हुज़ूर सय्यद मोहम्मद गुल बाबा मियाँ (7) सय्यदना हुज़ूर सय्यद मुराद मोहम्मद मियाँ (8)सय्यदना हुज़ूर सय्यद ख़ान मोहम्मद मियाँ (9) सय्यदना हुज़ूर सय्यद मोहम्मद अब्दुल अज़ीज़ मियाँ (10) सय्यदना हुज़ूर सय्यद पुरदल बाबा (11)सय्यदना हुज़ूर सय्यद शाह नक़ीब मियाँ (12) सय्यदना हुज़ूर सय्यद अब्दुर्रज़ाक़ मियाँ फर्ज़न्दे पंचम सरकार ग़ौस आज़म जीलानी (13) सय्यदना हुज़ूर शेख़ सय्यद अब्दुल क़ादिन जीलानी बग़दादी रिज़वानुल्लाहि अन्हुम अजमाईन।

हुसूल-ए-बेअत

हुसूले तालीम के बाद सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ वापस तोरढ़ेर शरीफ़ तशरीफ़ ले गए, फिर इश्तेयाक़ हुआ कि किसी पीरे कामिल के हाथ में हाथ देकर शर्फ़े बेअत हासिल किया जाए। सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ पीलीभीती विलायत के किस ऊँचे मंसब पर फ़ाईज़ थे इसका अंदाजा इससे ही लगाया जा सकता है कि दुनिया वालों को देखें कि लोग माल ओ दौलत के लिए अपना वतन छोड़ते हैं, रुपया कमाने के लिए अपना घर छोड़ते मगर सरकार अल्लाह हू मियाँ ने वतन छोड़ा, घर-बार छोड़ा, जमींदारी छोड़ी तो पीरे कामिल की तलाश में, और सैकड़ों मील क सफ़र तय फ़रमाकर पीरे कामिल की तलाश करते

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

करंते तोरढ़ेर शरीफ़ से बरेली तक तशरीफ़ ले आए लेकिन कोई पीरे कामिल नज़र नहीं आया। पीरे कामिल की आपकी तलाश बता रही हैं कि ऐसा नहीं है कि आप में लिल्लाहियत और विलायत की चमक मुरीद होने के बाद आई बल्कि विलायत तो आपको विरासत में मिली थी और आप मादरज़ाद अल्लाह के वली थे।

सय्यदना सरकार अल्लाह हू मियाँ इरशाद फ़रमाते हैं कि पीर की तलाश में पैदल सफ़र करते करते मेरे पाँव में आबले पड़ जाते थे और फूट जाते थे। अगर मेरे पाँव्वों के इन आबलों का पानी एक पल्ले में रख दिया जाए और मेरे मुरीदों के गुनाहों को दूसरे पल्ले में रख दिया जाये तो मेरे पाव्वों के आबलों का पानी भारी होगा और मेरे मुरीदों के गुनाह कम रह जायेंगें। सुब्हानल्लह !

सय्येदना आला हज़रत इमामुल अंबिया वल मुर्सलीन आक़ाए दो जहाँ रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने लाल को पीरे कामिल की तलाश में यूँ तड़पता हुआ देखा तो बशारत फ़रमाई कि पीलीभीत में मोहम्मद शेर के हाथ पर बैअत हो जाओ। और उधर पीलीभीत शरीफ़ में सरकार शाह जी मोहम्मद शेर मियाँ को बशारत फ़रमाई कि हमारा बेटा आ रहा है इसको मुरीद कर लेना ।

आपने इस ख़्वाब का हाल इसी मुहल्ले में रहने सय्यद इनायत अली शेरी से ब्यान फ़रमाया। वह साहब खुद भी हज़रत शाह जी मियाँ साहब के मुरीद थे। ख़्वाब का हाल सुनकर सरकार शाह जी मियाँ की खूब तारीफ़ फ़रमाई तो आपको मुलाक़ात का इश्तेयाक़ पैदा हुआ।

चुनाँचि 20 दिसम्बर 1888 ई० को आप पीलीभीत शरीफ़ पहुँचे। जब आप सरकार शाह जी मियाँ की ख़िदमत में पहुँचे तो सरकार शाह जी मियाँ ने देखकर फ़रमाया! आओ मौलवी साहब आओ! सरकार शाह जी मियाँ की बारगाह में पहुंचते हैं सरकार अल्लाह हू मियाँ को प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशादे पाक याद आ गया।

आपने मुरीद होने की इल्तेजा की और सरकार शाह जी मियाँ ने इरशाद फ़रमाया कि जिस ज़ात ने आपको यहाँ मुरीद होने के लिए

भेजा है उसी ज़ात ने हमें भी आपको मुरीद करने का हुक्म फ़रमाया है। चुनांचि 24 रबी उस्सानी 1306 हिजरी मुताबिक़ 28 दिसम्बर 1888 ई० बाद नमाज़े मग़रिब सरकार शाह जी मियाँ ने सरकार अल्लाह हू मियाँ को बैअत से मुशर्रफ़ फ़रमाया।

पीलीभीत शरीफ़ ही में हज़रत नूरुल हुदा शाह मियाँ अलैहिरहमा से आपकी मुलाक़ात हुई और उन्हीं की मस्जिद में ज़िक्र ओ अज़कार में मसरूफ़ हो गये। यही मस्जिद अब "मस्जिद अल्लाह हू मियाँ" के नाम से मशहूर है।

जब आप बहुक्मे मुरशिद इस मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो जिन्नात ने परेशान करना शुरु कर दिया। क्योंकि इस मस्जिद में जिन्नात का कब्ज़ा था। लेकिन सरकार अल्लाह हू मियाँ इस कसरत से अल्लाहू का ज़िक्र फ़रमाते थे कि जिन्नात ने भी आपके साथ अल्लाहू का ज़िक्र करना शुरु कर दिया । यह ख़बर शाह जी हुज़ूर को मिल चुकी थी कि हमारा मुरीद और ख़लीफ़ा इस शान के साथ अल्लाह का ज़िक्र करता है कि जिन्नात को भी अपने साथ इस ज़िक्र में शामिल कर लिया है तो जब सरकार अल्लाह हू मियाँ बारगाहे शेरी में हाज़िर हुए तो पीर-ओ-मुरिशद ने फ़रमाया 'आओ अल्लाह हू मियाँ आओ, आओ अल्लाह हू मियाँ आओ।' बस उसी दिन से सारा पीलीभीत और फिर सारी दुनियाँ आपको अल्लाह हू मियाँ के लक़ब से पुकारने और पहचानने लगी ।

सरकार अल्लाह हू मियाँ और आपकी औलाद अमजाद

सय्यदना ताजुल उराफ़ा ग़ौसे ज़माँ हज़रत अल्लामा मौलाना शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुल बसीर मियाँ उर्फ़ हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ रज़ियल्लाहू तआला अन्हु पीलीभीत शरीफ़ जहाँ मादरज़ात वली और औलियाए कराम की औलाद होने का शरफ़ रखते हैं वहीं सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ इस शान के वली हैं कि आपकी नस्ले पाक में औलिया ए किराम मौजूद हैं चुनांचि सय्यदी व मुरशदी हुज़ूर ताजुल औलिया क़ुतुबे ज़माँ हज़रत अल्लामा मौलाना अल्हाज शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुल क़दीर मियाँ पीलीभीत शरीफ़ रज़ियल्लाहू तआला अन्हु अपनी सीरत व सूरत से ही वली दिखाई देते थे। उन्हें जिसने देखा पुकार उठा कि अल्लाह के

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

वली हैं। आप अपनी हर अदा में अपने वालिदे माजिद के जानशीन थे। चलते-फिरते, उठते-बैठते आपसे करामातों का ज़ुहूर होता था। कम उमर में ही आप अपने वालिदे माजिद सरकार अल्लाह हू मियाँ की तरह मक़ाम-ए-ग़ौसियत पर जलवा अफ़रोज़ थे। सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ के पोते और सय्यदना ताजुल औलिया के नूरे नज़र के नुक़ूशे क़दम चलते हुए न सिर्फ़ यह मरतबा ए विलायत पर फ़ाईज़ हुवे बल्कि मक़ामे ग़ौसियत पर जलवा अफ़रोज़ हुवे और वह ज़ाते गिरामी है सय्यदना हुज़ूर क़िबला आलम मुरशिदे मोहतरम शेख़ुल अरबे वल अजम शबीहे सय्यदना हुज़ूर ग़ौसे आज़म, क़ुतुबे दौराँ ग़ौसे ज़माँ वलीए कामिल हज़रत अल्लामा अल्हाज शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुर्रशीद मियाँ रज़ियल्लाहो तआला अन्हु की। आपके चेहराए पाक पर विलायत के अनवार साफ़ दिखाई देते थे और आपके लब-हाए मुबारक से रूहानियत के मोती बरस्ते थे और आपकी रूहानियत इस मरतबा-ए कमाल पर थी कि जो आपको देखता था आपका आशिक़ हो जाता था और उसकी ज़बान पर यही सदा होती थी और दिल में यह यक़ीन होता था कि हमने पेशानी की आँखों से अल्लाह का वली देखा है। उलेमाए किराम हों या मशाइख़े इज़ाम सब आपकी विलायत पर मुत्तफ़िक़ थे। आप जहाँ भी जाते थे परवानों का हुजूम लग जाता था और आप अपने दर पर आने वालों की मुश्किल कुशाई, हाजत रवाई और फ़ैज़ रसाई का मुबारक फ़रीज़ा कल भी सरअन्जाम देते थे और आज भी आपके दरबारे पाक से सुबह व शाम हज़ारों मंगतों को उनके मन की मुरादें मिल रही हैं। कितने ऐसे लोग देखे हैं कि वह अपने दुख दर्द की कहानी लाए और हुज़ूर क़िबला ए आलम ने निगाहे करम डाली सारा दर्द काफ़ूर, सारा दुख दूर हो गया।

सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ की औलाद भी मादरज़ात वली है। चुनांचि ताजुल फ़ुक़रा हुज़ूर ग़ौसुल ग़वास क़ुतबुल अक़्ताब हज़रत हाजी शाह जी मोहम्मद शेर मियाँ रज़ियल्लाहू तआला अन्हू ने हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ को वक़्ते बेअत व ख़िलाफ़त फ़रमा दिया था कि मौलवी साहब हमने आपको भी ख़िलाफ़त व इजाज़त व विलायत आज ही दी और आपके बेटे को भी आज

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

ही ख़िलाफ़त व इजाज़त व विलायत अता फ़रमा दी और आपके बेटे के बेटे को भी आज ही ख़िलाफ़त व इजाज़त व विलायत अता फ़रमा दी और इसके बाद जो करेगा सो पावेगा। लिहाज़ा हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ और आपकी दो नस्लें तो विलादत से पहले ही बेअत व ख़िलाफ़त ब विलायत की नेमत से बज़रिए पेशनगोई मालामाल हैं और अब सय्यदना हुज़ूर क़िबलाए आलम के साहबज़ादे और जानशीन सय्यद ताजुल फ़ुक़्राहा वली उल औलिया सिराजे आलम हज़रत अल्लामा मौलाना अल्हाज क़ाज़ी शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुल अहद मियाँ साहब क़िबला मद्दाज़िल्लहुल आली डबल एम.ए. सज्जादानशीन दरबार सय्यदना हुज़ूर अल्लाहू मियाँ पीलीभीत शरीफ़ हैं जो अपने किरदार में अपने अजदाद का नमूना हैं और सारा सिलसिला ए आलिया उनकी विलायत पर मुत्तफ़िक़ है और उनसे से भी आम तौर पर करामतों का ज़ुहूर होता रहता है। पूरी ज़िन्दगी इबादत व रियाज़त व ख़ल्क़े ख़ुदा की ख़िदमत में गुज़रती है, आप अपने मुआमलात में सख़्ती के पाबन्द हैं। नमाज़ तहज्जुद आपकी क़ज़ा नहीं होती। सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ अपनी अस्ल और नस्ल दोनों आइनों से वलीए कामिल साफ़ नज़र आते हैं ।

ख़ादमाने सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ

सय्येदना हुज़ूर शाह जी मियाँ की ख़िदमत का जो सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ था उसी का यह असर हुआ था कि उनकी ख़िदमत से फ़ैज़याब होने का शरफ़ आपके ख़ादिमों को हासिल हुआ और इस मस्जिद में जनाब मोहम्मद अकबर पेशावरी, मौलाना यार गुल पेशावरी, जनाब अली हसन, जनाब वाजिद अली,जनाब हकीम शरीफ उल्लाह, जनाब मुल्ला नियाज़ अहमद, जनाब अली अहमद रहमातुलल्लाहि अलैह आपकी ख़िदमत से मुस्तफ़ीज़ होते रहे।

करामाते सय्येदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ

करामत (1): हाफ़िज़ शरीफुल्लाह व एहले मोहल्ला मोहम्मद वासिल पीलीभीत शरीफ़ से रिवायत है कि हम खखरा नदी पार एक आम के बाग़ में एक बुज़ुर्ग हज़रत सैय्यद अहमद शाह और सरकार अल्लाह हू मियाँ को ले गए, दोनों अल्लाह वाले एक चारपाई पर बैठे और आपस

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

मैं मुख़्लिसाना गुफ़्तुगू होती रही। इत्तेफ़ाक़न अब्र छा गया। सय्यद साहब ने फ़रमाया बारिश हो जाय तो गर्मी दूर हो जाये। सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया कि हमारे नीले काले कपड़े भीग जाऐंगे और बदन को भी काला कर देंगे इस लिये हम पर न बरसे। सैय्यद साहब ने अब्र को इशारा किया, वह ऊपर आ गया। हज़रत ने इशारा किया तो वह हट गया। आख़िरकार सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया कि तुम पर बरसे हम पर न बरसे तो एक ही चारपाई पर दोनों बुज़ुर्ग बैठे थे सैय्यद साहब पर बारिश होती रही और सरकार अल्लाह हू मियाँ उस से मेहफ़ूज़ रहे। सैयद साहब मौसूफ़ ने फ़रमाया कि बेशक यह तसर्रुफ़ात सरकार शाह जी मियाँ के बाद आप को हासिल हैं।

करामत (2): जोशी टोला का एक बढ़ई एक बाग़ से गुज़र रहा था तो उसने देखा कि सरकार अल्लाह हू मियाँ के जिस्म का हर हिस्सा जुदा जुदा पड़ा है। वह घबराया कि हज़रत को किसी ने मार डाला है, यह मंज़र देख कर उस पर बेहोशी तारी हो गई, जब होश आया तो उसने सरकार अल्लाह हू मियाँ को बाग़ से वापस आते हुए देखा तो आप ने उस से फ़रमाया कहा कि तुम घबरा गए थे उसने कहा कि मियाँ मुझे घबराहट थी कि आपको किसी ने शहीद कर दिया है, आपने फ़रमाया यह बात किसी से न कहना। बढ़ई ने यह बात किसी से नहीं कही लेकिन इस घटना के पंद्रह साल बीत जाने के बाद जब सरकार अल्लाह हो मियाँ के विसाल का समय आया और वह बढ़ई सन्दूक लगाने आया ता उसने यह बात सबको बताई।

करामत (3): सय्येदना ताजुल औलिया कुतुब-ए-जमाँ हज़रत अल्लामा मौलाना अलहाज सैय्यद मोहम्मद अब्दुल क़दीर मियाँ रजियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तोरढ़ेर शरीफ़ में एक जगह जो सरकार अल्लाह हू मियाँ का क़दीमी हुजरा था और वहां की मिट्टी से बैठक बनाई गई थी जो हज़रत के मुरीदीन मोहम्मद हनीफ़ हलबी और मोहम्मद ज़फ़र बना रहे थे। गढ़े पाटने के इरादे से हज़रत से इजाज़त लेकर बैल पर मिट्टी लाना शुरू कर दिया और बारह बजे तक वह काम ख़त्म हो गया, सब लोग

बैठक में आए, हज़रत ने फ़रमाया मांग मोहम्मद हनीफ़ मांग क्या मांगता है! उसने कहा कि हुजूर मेरे दो भाई और वालिद को दस साल की सज़ा हो गई है उन्हें रिहा करा दीजिए। आपने कहा कि वे लोग आकर तुझ से झगड़ा करेंगे तू कुछ और मांग! लेकिन उसने फिर वही दरख़्वास्त की, जब तीन बार इसरार किया तो आपने जोश में आकर फ़रमाया कि अगर खुदा ने चाहा तो हमने छुड़वा दिया और चार-पांच दिन बाद वह दस-दस साल के क़ैदी लौट आये। चंद रोज़ बाद मोहम्मद हनीफ़ से झगड़े हुए जैसा कि हज़रत ने फ़रमाया था और फिर मोहम्मद हनीफ़ पछताया। आपने फ़रमाया कि कोई और चीज़ तलब की होती तो अच्छा होता, अब वक़्त गुज़र गया तो क्या हो सकता है ?

करामत (4): तोरढ़ेर शरीफ़ में अमीर हबीबुल्लाह साहब वाली-ए-विलायते अफ़ग़ानिस्तान ने हिन्दुस्तान में सरकार शाह जी मियाँ की बारगाह में हाज़री का इरादा किया। सरकार शाह जी मियाँ ने सरकार अल्लाह हू मियाँ से फ़रमाया कि हबीब आ रहे हैं। उनकी निगरानी मुक़ामे अटक तक तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ क्या तुम उनकी निगरानी कर सकते हो? सरकार अल्लाह हू मियाँ ने अर्ज़ की हाँ हुज़ूर की बरकत से हो सकती है। चुनांचि तीन दिन सरकार अल्लाह हू मियाँ ने आराम नहीं फ़रमाया और उनकी निगरानी फ़रमाई। फिर इलाक़ा अटक में दूसरे मुतासर्रिफ़ के सुपुर्द कर दिया, सरकार अल्लाह हू मियाँ ने यह वाक़्या अपने शहजादे सरकार ताजुल औलिया से बयान फ़रमाया।

करामत (5): सरकार ताजुल औलिया बयान फ़रमाते हैं कि एक बार आप ने तारेढेर शरीफ़ में लोगों से फ़रमाया, अपना अपना भूसा इकट्ठा कर दो और उसकी निगरानी कर लो, ना मालूम क्या आफ़त आए। लोगों ने कोई ध्यान नहीं दिया, आपके हुक्म से आपके शहज़ादे सरकार ताजुल औलिया ने अपना भूसा उठवाकर और मट्टी लैस कर महुफ़ूज़ कर दिया। उसी दिन शाम को इस क़दर ज़ोर की आंधी आई कि बड़े-बड़े पेड़ जड़ से उखड़ कर दूर गिर पड़े, आंधी इस क़दर था कि लालटेन की रोशनी में भी एक को दूसरा नज़र न आता था, सब लोगों

का भूसा उड़ गया और अपका भूसा महफ़ूज़ रहा। सरकार अल्लाह हू मियाँ उस वक़्त अपने हुजरे में इस्तग़राक़ की हालत में तशरीफ़ रखते थे कि सरकार ताजुल औलिया ने जाकर दुआ के लिये अर्ज़ किया, आपने दुआ फ़रमाई, आंधी दूर हुई मगर आपके हुक्म का अमल न करने की वजह से इस आंधी में लोगों का बड़ा नुक़सान हुआ।

करामत (6): एक बार रमज़ाने मुबारक में मस्जिद गुल बाबा तोरढ़ेर शरीफ़ में ख़त्मे कुरान पाक के मौक़े पर सरकार अल्लाह हू मियाँ ने सरकार सरकार ताजुल औलिया से फ़रमाया कि एक देग़ सफ़ेद चावल की पकवालो ताकि फ़ातिहा हो जाए लेकिन जब बादे मग़रिब लोगों की कसरत देखी तो चन्द साथियों ने पूछा कि एक देग़ से काम नहीं चल सकेगा दूसरी देग़ भी पकवा लीजिए! सरकार अल्लाह हू मियाँ का फ़रमान एक ही देग़ का था तो एक ही पकवाई गई, ख़त्म शरीफ़ के बाद फातिहा हुई, सरकार ताजुल औलिया ने कहा कि सरकार अल्लाह हू मियाँ ने हुक्म दिया था कि उसके ऊपर चादर डाल दो! चादर डाल कर खाना खिलाना शुरू किया और तक़रीबन पांच सौ लोगों ने खाना खाया और इसमें इतनी बरकत हुई कि लोग तबर्रुक साथ भी ले गए ।

करामत (7): मुंशी वली मोहम्मद साहब पीलीभीती और जनाब अब्दुल रहमान साहब घड़ीसाज़ पीलीभीती से रिवायत है कि अजमेर शरीफ़ सय्येदना हज़रत ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के उर्स पाक में हम कुछ लोग पीलीभीत शरीफ़ के हाज़िर थे और कराची, बम्बई, पेशावर, बरेली के लोग भी मौजूद थे। एक दिन बादे ज़ुहर सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया कि जो लोग बम्बई, कराची और बरेली के हैं उनकी दावत हमारी तरफ़ से कर दी जाए। चुनांचि दोपहर के वक़्त जब लोग जमा हुए तो हज़रत ने एक रुपया मुझे दिया और कहा कि बारह आना की रोटी और चार आना का गोश्त पका हुआ ले आओ। मैंने अर्ज़ किया कि यह थोड़ा है। हज़रत ने कहा कि तुम जाओ, जा कर ले आओ! मैं ले आया, सरकार अल्लाह हू मियाँ ने रोटियों को चादरे मुबारक में छुपा लिया और सालन के बर्तन को भी चादरे मुबारक से ढक लिया और उसमें से रोटी निकालते गए

और खिलाते गए। वे बारह आना की रोटियाँ और चार आना का गोश्त सब लोगों को काफ़ी हुआ, फिर एक भिशती ने आकर अर्ज़ किया कि मैंने लोगों को पानी पिलाया था मुझे कुछ नहीं मिला। सरकार अल्लाह हू मियाँ ने चादर झाड़ी तो एक रोटी और निकली वह भिशती को अता फ़रमा दी।

करामत (8): मोहम्मद उस्मान साहब के वालिद फ़रमाते हैं कि हम हज़रत क़िबला सय्यद मियाँ की ख़िदमत में रहते थे। एक दिन सय्यद मियाँ साहब सय्येदना सरकार शाह जी मियाँ की ज़ियारत को तशरीफ़ ले गए तो वहां से सरकार अल्लाह हू मियाँ के पास आए और हुजरे में आवाज दी, हुज़ूर बाहर आए और मस्जिद की फ़सील पर बैठ गए, हम तीनों वहां बैठे थे, सय्यद मियाँ साहब और सरकार अल्लाह हू मियाँ के दरमियान राज़ ओ नियाज़ की गुफ़्तुगू होती रही, सय्यद मियाँ ने बातों बातों में फ़रमाया कि इस वक़्त तो पीने के लिये दूध होता और फिर बातचीत करने लगे, थोड़ी देर बाद एक शख़्स गर्म गर्म दूध लाया और हम तीनों ने पेट भर कर दूध पिया।

करामत (9): एक दिन सरकार अल्लाह हू मियाँ जनाब हब्बू ख़ान के मकान पर आराम फ़रमा रहे थे कि एक औरत आई जिसका नाम जवाहर था और वह चादर से मुंह छुपाए हुए थी, आप लेटे हुए थे, उसने अर्ज़ किया हुज़ूर मेरे कोई औलाद नहीं है। आपने फ़रमाया जवाहर हमने तुम्हारा लड़का देखा है, उसने अर्ज़ किया कि मेरे शौहर काफ़ी वक़्त से बीमार हैं, फ़रमाया तुम्हारे शौहर अब्दुल रज़्ज़ाक कुछ अर्से बाद अच्छे हो जाएंगे, चुनांचि उसे सेहत मिली और उससे लड़का पैदा हुआ और उसका नाम शान मोहम्मद रखा गया।

करामत (10): एक दिन सय्येदना सरकार अल्लाह हू मियाँ मस्जिद के आंगन में ज़िक्र में मसरूफ़ थे और पास में बहेड़ी से एक बारात आई हुई थी जिसमें नाच गाना हो रहा था। आपको इस की बजह से परेशानी हुई और इबादत में ख़लल पड़ा। सुबह बाद नमाज़े फज्र तक रक़्स जारी रहा तो सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया, पानी बरसे तो उनका नाच गाना बंद हो जाए चुनांचि भारी बारिश हुई और लोग बारिश से बचने के लिए मस्ज़िद

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

में आ गए तो आपने उनसे फ़रमाया कैसे आए बैठो! रावी बयान करते हैं कि मेरे मुंह से निकला कि वे आप ही के भगाए हुए आए हैं, आपने उनके मुंह पर हाथ रख दिया कि चुप रहो क्योंकि वह वक़्त बारिश का न था।

करामत (11): सय्येदना हुज़ूर शाह जी मियाँ के लंगर ख़ाने में आप अक्सर खाना तक़सीम फ़रमाया करते थे, लंगरख़ाने के मुनतज़िमीन ने आप से शिकायत की कि यहाँ चोरी होने लगी है। शायद शाह जी मियाँ का इस तरफ़ ख़्याल नहीं, आपने फ़रमाया एक शख़्स यहाँ आता है और वह चोरी करता है मैं उसे पकड़ूंगा और फ़रमाया कि यह चोर बरेली का है जो शाह जी मियाँ के प्यार का दम भरता है लेकिन यहां आकर चोरी करता है, इत्तेफ़ाक़ से वह शख़्स रात में वहां मौजूद था और उसी रात उसने एक रामपुर वाले शख़्स का सामान चुराने की कोशिश की और रंगे हाथों पकड़ लिया गया, आप मस्जिद में मक़बरे में बैठे हुए थे, लोगों ने चोर को सज़ा देकर छोड़ दिया। आपने फ़रमाया दीखो वही चोर निकला जिसको हमने समझा था।

करामत (12): माह ज़ीक़ादह 1339 हिजरी में सरकार अल्लाह हू मियाँ और सरकार ताजुल औलिया तोरढ़ेर शरीफ़ से पीलीभीत शरीफ़ तशरीफ़ ला रहे थे और तांगे में सवार थे तो आपने सरकार ताजुल औलिया से फ़रमाया कि हमने तुम्हारे लिये एक बेटा ख़ुदा से मांग लिया है चुनांचि उसी साल सय्येदना हजूर क़िबला ए आलम सय्यद मोहम्मद अब्दुर्रशीद मियाँ पैदा हुए। विसाल से एक साल क़ब्ल इसी तरह जब आप वतन से पीलीभीत शरीफ़ तशरीफ़ ले जा रहे थे तो आपने इरशाद फ़रमाया कि हमने तो अल्लाह तआला से एक बेटा मांगा था लेकिन अल्लाह तआला मज़ीद नवाज़ना चाहता है तो सरकार अल्लाह हू मियाँ के विसाल के बाद सय्यद अब्दुल वहीद मियाँ पैदा हुए।

करामत (13): सय्येदना सरकार अल्लाह हू मियाँ ने सरकार क़िबल-ए-आलम की विलादत से पहले सरकार ताजुल औलिया से इरशाद फ़रमाया कि मैंने तुम्हारे वास्ते अल्लाह से एक लड़का तलब किया है जो तुम्हारे जैसा ही फ़रमाँबरदार और क़ायम मक़ाम होगा जैसा कि आप हमारे वारते थे। चुनांचि 19 रजब 1339 हिजरी में जब सय्येदना हुज़ूर

किबला-ए-आलम की विलादत हुई। शाबान 1339 हिजरी में जब सय्येदना सरकार अल्लाह हू मियाँ तौरढ़ेर तशरीफ़ ले गए तो आप ने अपनी ज़ुबाने मुबारक सरकार क़िबला-ए-आलम के मुंह में देकर क़रीब एक घंटे चुसाई और फ़रमाया कि यह बच्चा हमारे मुर्शिद सरकार शाह जी मोहम्मद शेर मियाँ की तरह उम्र दराज़ होगा और फ़ैज़याब होगा। इसी सिलसिले का एक वाक़्या यह भी है कि सरकार ताजुल औलिया ने तौर ढेर शरीफ़ में एक ख़्वाब देखा कि सरकार शाह जी मियाँ उस हुजरे में तशरीफ़ रखते हैं जिसमें सरकार अल्लाह हू मियाँ का मज़ार है और सरकार क़िबला-ए-आलम सरकार शाह जी मियाँ की गोद में बैठे हुए हैं और सरकार शाह जी मियाँ की दोनों छातियां दूध से भरी हुई हैं और आप हुज़ूर क़िबला-ए-आलम को दूध पिला रहे हैं और सीने पर हाथ फेर कर फ़रमा रहे हैं कि यह हमारा बच्चा है, इसलिए इस वाक़्ये को सरकार ताजुल औलिया ने अपने वालिद सय्येदना सरकार अल्लाह हू मियाँ को एक ख़त लिखकर बताया तो सरकार अल्लाह हू मियाँ बहुत खुश हुए इस समय सरकार क़िबला-ए-आलम की उम्र शरीफ़ तीन महीने थी।

करामत (14): एक बार मौलाना सैय्यद हलीम गुल मियाँ की दरख़्वास्त पर सरकार अल्लाह हू मियाँ मुंबई तशरीफ़ ले गए और वहां एक फ़क़ीर अब्दुर्रहमान मज्जूब के पास तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त वहाँ एक कोहिस्तानी मौलवी साहब बैठे हुए थे उन्होंने ज़िक्र किया था कि हम मुल्के शाम से आए हैं और वहां के मुतासर्रिफ़ ने मुझे भेजा है कि तुमको हिन्दुस्तान की विलायत अब्दुर्रहमान बाबा से मिलेगी। जिस वक़्त दरवाज़ा खुला तो मजज़ूब साहब चाय पी रहे थे । ख़ादिम ने सरकार अल्लाह हू मियाँ को बुलाया तो अंदर तशरीफ़ ले गए और सरकार शाह जी मियाँ के फ़ैज़ से उनके मज्ज़ूब पर अपने तसर्रुफ़ात बातिनी का असर डाला तो वह फ़क़ीर चीख उठे और कहा कि मौलवी मारने आया है, इस हैबत से सब बर्तन चाय के तोड़ डाले। जब आप तशरीफ़ लाए तो कोहिस्तानी मौलवी साहब से फ़रमाया कि वह हमारी तवज्जोह की ताक़त नहीं रखता है तो आपको हिन्दुस्तान की हुकूमत क्या दे सकेगा, आप अफ़ग़ानिस्तान

जाएं आपको यहाँ रहने का हुक्म नहीं है।

करामत (15): एक मर्तबा सरकार अल्लाह हू मियाँ अजमेर शरीफ़ तशरीफ़ ले गए वहाँ सय्येदना हज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियअल्लाहु तआला अन्हु के दरबार में सय्यद हलीम गुल मियाँ साहब वग़ैरा भी मौजूद थे। फ़ुक़रा जमा हुए और यह गुफ़्तुगू की कि आज रात में तसर्रुफ़ात बातिनी की सलतनत हुज़ूर ग़रीब नवाज़ की तरफ़ से जिसके वास्ते हुक्म होगा दी जायेगी, सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया कि पहले किसकी सलतनत थी? फ़ुक़रा ने फ़रमायसा कि पहले शाह जी मोहम्मद शेर मियाँ साहब पीलीभीत की थी, सरकार अल्लाह हू मियाँ सारी रात मज़ार शरीफ़ पर रहे। सुबह फिर सब फ़ुक़रा जमा हुए और उन्होंने चमड़े का मुसल्ला लाकर बिछाया और कहा ख़्वाजा साहब ने हज़रत मोहम्मद शेर के बाद वह सलतनत आपको अता फ़रमाई है। आप ने उस चमड़े पर कपड़ा बिछा कर नमाज़ अदा की । वह मुसल्ला शरीफ़ अब हुज़ूर सिराज आलम किबला के पास मौजूद है।

करामत (16): सरकार अल्लाह हू मियाँ एक बार वतन शरीफ़ से पीलीभीत शरीफ़ बज़रिए ट्रेन तशरीफ़ ला रहे थे, स्टेशन पर लोग ख़ैरमख़दम के लिये हाज़िर हुए और तमाम ट्रेनें तलाश करलीं मगर आपको न पाया मायूस लौटे, मस्जिद में आकर देखा तो सरकार अल्लाह हू मियाँ वहां मौजूद थे। आपको यह मन्ज़ूर न था कि लोग शान-ओ-शौकत से ख़ैरमख़दम करते हुए ले जाएं लिहाज़ा आपके तसर्रुफ़ से कोई आपको न देख सका हालांकि आप उसी ट्रेन से आए थे।

करामत (17): आशिक़ मीलाद ख़्वाँ का बयान है कि एक बार बरेली के मोहल्ला शाहदाना अली जान साहब के मकान पर मीलाद शरीफ़ में सरकार अल्लाह हू मियाँ रौनक अफ़रोज़ थे। रात बारह बजे के बाद मीलाद शरीफ़ ख़त्म हुआ और सब लोग सो गए। सरकार अल्लाह हू मियाँ भी एक हुजरे में सो रहे हैं, आप ने फ़रमाया कि हम अव्वल वक़्त में फज्र अदा करके पीलीभीत शरीफ़ चले जाएंगे, अली जान साहब ने इसरार किया कि आप कल भी यहीं क़्याम फ़रमायें मगर आपने क़ुबूल न फ़रमाया, जब आप हुजरे

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

में सो रहे तो साहिबे ख़ाना ने हुजरे में ताला डाल दिया कि सरकार अल्लाह हू मियाँ न जा सकें मगर जब सुबह के वक़्त कमरे का ताला खोला तो सरकार अल्लाह हू मियाँ कमरे में तशरीफ़ नहीं रखते थे, तलाश किया गया तो पता चला कि आप पीलीभीत शरीफ पहुंच गए हैं।

करामत (18): एक बार सरकार अल्लाह हू मियाँ बीका ज़िला पेशावर में एक बुजुर्ग हज़रत गुलाम हैदर के यहाँ तशरीफ़ ले गए। रास्ते में वहाँ बारिश हुई आंधी आई लेकिन जब आप वहां पहुंचे तो देखा कि आप पर बारिश के आसार बिल्कुल नहीं थे। उन बुजुर्ग ने कहा कि अल्लाह हू मियाँ को अल्लाह तआला ने बहुत तसर्रुफ़ात अता फ़रमाये हैं।

करामत (19): एक बार सरकार अल्लाह हू मियाँ पेशावर तशरीफ़ ले गए, वहाँ एक कोहिस्तानी मुल्ला साहब आये थे जो बड़े आमिल व कामिल थे। तहकाल से आए थे और बहतु से मुरीदों और अक़ीदतमंदों को साथ लाए थे, मुल्ला साहब ने सरकार अल्लाह हू मियाँ के तलवों को बोसा दिया, उस पर एक बुजुर्ग जनाब सयद फ़क़ीर शाह साहब ने जिनके मकान पर सरकार अल्लाह हू मियाँ ठहरे हुए थे, अर्ज़ किया कि हज़रत हम सब लोग तो उनके पीछे पीछे फिरते हैं और यह अपकी क़दमबोसी कर रहे हैं, सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया कि हम पीलीभीत के शाह जी मियाँ के बेटे हैं और बादशाह का बेटा शहज़ादा होता है तो उन पर हमारी ताज़ीम फ़र्ज़ है। मुल्ला साहब ने इसे तसलीम किया और फिर मुल्ला साहब ने सरकार अल्लाह हू मियाँ से तहकाल तशरीफ़ लाने की गुज़ारिश की कि हमने वहाँ एक मदरसा क़ायम किया है आप वहाँ तशरीफ़ ले चलिए आपके वहाँ जाने से उसमें बरकत होगी आपकी दुआ से हमारे मदरसे की तरक़्क़ी होगी। आपने फ़रमाया कि आपने जो मदरसा क़ायम किया है यह खुदा की तरफ़ से हुक्म हुआ था या अपनी मर्ज़ी से क़ायम किया है ? मुल्ला साहब ने कहा कि मैंने अपनी तरफ़ से क़ायम किया है, सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया कि मदरसा चलना मुश्किल है, फिर मुल्ला साहब ने ख़िलाफ़े वादा आपको रोका और कहा हम इस वक़्त आपको जाने न देंगे हमने हिसार कर दिया है। आपने जोश में आकर एक हाथ ऊँचा करके कहा, जाओ हमने तुम्हारा हिसार तोड़ दिया और आप

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

अपनी लकड़ी और पगड़ी मुबारक लेकर रवाना हो गए और वह लोग हज़रत को न देख सके। बाद नमाज़े अस्र हज़रत को ना पाया, दूसरे रोज़ मुल्ला साहब ने हज़रत के पास पेशावर आकर माफ़ी मांगी। इसी साल उन मुल्ला साहब ने अजमेर शरीफ़ जाकर सय्यद हलीम गुल मियाँ साहब से यह हाल बयान किया कि यह हिसार इतना ज़बर दस्त था कि कोई इससे निकल नहीं सकता था लेकिन सरकार अल्लाह हू मियाँ ने अपने तसर्रुफ़ाते रूहानी से उखाड़ फेंका। थोड़े अर्से बाद मूल्ला साहब का इंतेक़ाल हो गया और उनका मदरसा भी बंद हो गया।

करामत (20): एक बार सय्येदना हुज़ूर शाह दरगाही महबूबे इलाही रज़ियल्लाहु अन्हु के उर्स पाक के ज़माने में सरकार अल्लाह हू मियाँ तौरढ़ेर शरीफ़ तशरीफ़ रखते थे। आपके साथ सरकार ताजुल औलिया थे और अज़ीज़ुल्लाह नामी एक मुरीद था जो निहायत हाज़िर बाश था। बाद नमाज़ अस्र आपने सरकार ताजुल औलिया से फरमाया कि इस वक़्त हुज़ूर शाह दरगाह के कुल का वक़्त है। मराक़िब होकर कुल शरीफ़ में शिरकत करें चुनांचि यही अमल किया गया। रामपुर के लोगों का बयान है कि हम ने सरकार अल्लाह हू मियाँ को कुल शरीफ़ मैं यहाँ देखा था और कुल के बाद आपको नहीं पाया। रामपुर के बहुर्त लोगों ने इस वाक़ए को बयान किया है।

करामत (21): सय्येदना सरकार अल्लाह हू मियाँ को विसाल शरीफ़ के पंद्रह रोज़ बाद रामपुर में घूमते हुए देखा गया। यह वाक्या अक्सर लोगों ने बयान किया, मगर जब वह मिलने गए तो आपको न पाया। विसाल शरीफ़ से पहले तीन साल आप ज़्यादातर इस्तग़राक़ के आलम में रहा करते थे, अक्सर फ़रमाते थे कि अब्दुल क़दीर! अब हम तुम्हारी ओर से फ़ारिग़ और मुतमईन हो गए हैं, हमे तुम्हारी तरफ़ से बहुत फ़िक्र रहा करती थी, अब बिफ़ज़लिही तआला वह फ़िक्र दूर हो गई, हमने जो कुछ खुदा से तलब किया वह अपने लिए ही नहीं तुम्हारे लिए भी तलब किया, दुनिया के मामलात न हमने अपने लिए तलब किए न तुम्हारे लिए तलब किए, तुम्हारी आबरू अल्लाह तआला रखेगा, एक वक़्त वह आएगा कि खुदा तआला तुम्हें एक नेअमते उज़मा अता करेगा जिससे एहले ज़माने को हसरत होगी कि काश यह नेअमत हमको भी मिलती। चुनांचि मौलवी

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

हमेश गुल मियाँ साहब से फ़रमाया कि हम अल्लाह तआला की मर्ज़ी से वह नेअमते उज़मा अपने बच्चों को देंगे, किसी ग़ैर का मोहताज नहीं बनाएंगे।

(नोट) - सय्येदना हुज़ूर ताजुश्शुरफ़ा शेखुल अरबे वल अजम शबीहे सय्यदना हुज़ूर ग़ौसे आज़म मुरशिद मोहतरम हज़रत अल्लामा अल्हाज शाह सय्यद मोहम्मद अब्दुर्रशीद मियाँ रज़ियल्लाहु अन्हु ने 2002 में एक महफ़िल में अमीर अहले सुन्नत मुजद्दिद दीन ओ मिल्लत हुज़ूर मुनाज़िरे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु से इरशाद फ़रमाया कि मौलाना साहब वह नेअमते उज़मा आप हैं जो अल्लाह ने हमारे बाबा जान सरकार ताजुल औलिया रज़ियल्लाहो अन्हु को अता फ़रमाई है। सुभहानल्लाह

करामत (22): मुंशी वली मोहम्मद साहब बयान करते हैं कि एक बार मैं सरकार अल्लाह हू मियाँ के साथ अजमेर शरीफ़ से दिल्ली के लिए रेल में सवार हुआ कि तहज्जुद की नमाज़ के वक़्त एक छोटे से स्टेशन पर ट्रेन रुकी, सरकार अल्लाह हू मियाँ ने रफ़अए हाजत के लिए बाहर जाने का इरादा फरमाया और ढेले तलब किए, मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर यह बहुत छोटा स्टेशन है यहाँ ट्रेन ज़्यादा देर नहीं रुकेगी, लेकिन आप ढेले लेकर चल दिए और फ़रमाया कि आप पानी लाओ! चुनांचि पानी आया, आपने नमाज़ पढ़ी और फिर फ़ज्र की नमाज़ भी वहीं अदा फरमाई लेकिन ट्रेन अपनी जगह से न हिली। दिल्ली स्टेशन पहुंचकर सरकार अल्लाह हो मियाँ ने कहा कि अगर ट्रेन अंधेरे में स्टेशन पर आती तो हम तुम कहाँ परेशान होते? खुदा ने हमें दिन में पहुंचा दिया।

करामत (23): हाफ़िज़ गुलाम मोहिउद्दीन रामपुरी बयान करते हैं कि एक दिन रामपुर में बाद नमाज़ ईशा मैं सरकार अल्लाह हू मियाँ के पावँ दबा रहा था कि एक मुरीद अहमद ख़ान नामी हाज़िर होकर इजाज़त चाहने लगे कि पीलीभीत शरीफ़ जाऊंगा, सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया-अच्छा! कुछ देर बाद अहमद ख़ान चले गए, उधर सरकार अल्लाह हू मियाँ को कुछ गुनूदगी तारी हुई हालते गुनूदगी में फ़रमाया कि अहमद ख़ान तुम रह गए और गाड़ी छूट गई! मुझे तअजजुब हुआ कि अहमद ख़ान तो चले गए फिर सरकार अल्लाह हू मियाँ किस से इरशाद फरमा रहे हैं? दूसरे दिन

अहमद ख़ान फिर हस्बे मामूल आए तो सरकार अल्लाह हू मियाँ मुस्कुराए, अहमद ख़ान कहने लगे हुज़ूर मैंने टिकट भी नहीं लिया था कि गाड़ी छूट गई, तब मुझे गुज़िश्ता रात का वाक़्या याद आ गया कि सरकार अल्लाह हू मियाँ ग़ुनूदगी में क्या इरशाद फ़रमा रहे थे, मैंने जब यह बात सरकार अल्लाह हू मियाँ से अर्ज़ की तो सरकार तबस्सुम फ़रमाने लगे ।

करामत (24): विसाल शरीफ़ से एक महीने पहले सरकार अल्लाह हू मियाँ ने जनाब शहज़ादे मियाँ मुतावल्ली दरगाह सय्यदना हुज़ूर शह दरगाही महबूबे इलाही रज़ियल्लाहु अन्हु को कुछ तालीम फ़रमाकर सरहिन्द शरीफ़ सय्यदना हुज़ूर मुजद्दिद अलफेसानी शेख़ अहमद फ़ारुक़ी सरहिंदी रज़ियल्लाहु अन्हु के उर्स पाक में भेजा और फ़रमाया कि जाकर मुराक़बा करना और मज़ारे अक़दस से मुराक़बे में जो सूरत ज़ाहिर हो वह आकर मुझसे बयान करना। चुनांचि शहज़ादे मियाँ साहब ने इसी तालीम कर्दा तरीक़े से मुराक़बा किया तो देखा कि मज़ार शरीफ़ के सरहाने से एक माहताब ज़ाहिर हुआ और उसकी रोशनी से ता हद्दे नज़र रौशनी ही रौशनी हो गई और यह माहताब ज़मीन से तक़रीबन एक गज़ ऊंचा हुआ तो वह चाँद अपनी रोशनी बिखेर कर अचानक वहीं ग़ायब हो गया। शहज़ादे मियाँ ने वापस आकर यह वाक़्या सरकार अल्लाह हू मियाँ से बयान किया तो सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया कि अब हमें देर नहीं करनी चाहिए हमारा वक़्त आ गया है और यही अलामत थी हमारी रुख़सती की। उसी रोज़ सरहिन्द शरीफ़ और क्लयर शरीफ़ तशरीफ़ ले गए और लौटने पर फिर रामपुर तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कि अब हमको वतन जाना है। कुछ लोगों ने सोचा कि अभी कुछ दिन पहले ही तो मियाँ वतन यानी पेशावर से तशरीफ़ लाए हैं अब फिर पेशावर जाना चाहते हैं, लेकिन जब कुछ ही दिनों बाद सरकार अल्लाह हू मियाँ ने पीलीभीत में विसाल फ़रमाया तो लोगों को मालूम हुआ कि वतन से मुराद असली वतन था।

करामत (25): सफ़दर अली खां उर्फ़ सद्दन खां साकिन मोहल्ला मोहम्मद वासिल बयान करते हैं कि एक रात मैंने ख़्वाब देखा कि सरकार अल्लाह हू मियाँ अपने फ़रज़न्द सरकार ताजुल औलिया को साथ लिए हुए,

सय्येदना हुज़ूर हाफिज़ शाह जमालुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु रामपुर शरीफ़ के रूबरू खड़े हुए हैं और सरकार ताजुल औलिया को उनके सामने पेश किया और कुछ अर्ज़ किया। उसके कुछ देर बाद खुशी -खुशी सरकार अब्दुल क़दीर मियाँ को साथ लिए हुए वापस तशरीफ़ ले गए। अगले दिन सरकार अल्लाह हू मियाँ के विसाल की ख़बर मालूम हुई तो समझ में आया कि सरकार ने पहले ही अपना जाँनशीन मुक़र्रर फ़रमाया दिया है।

करामत (26): हाजी हाफ़िज़ मोहम्मद जान मीलाद ख़्वाँ साकिन बरेली बयान करते हैं कि मैं सफ़र ए हज पर रवाना होने वाला था उन्ही दिनों सरकार अल्लाह हू मियाँ भी बरेली में मंजूर हुसैन व तुफ़ैल अहमद के मकान मोहल्ला सूफ़ी टोला में तशरीफ़ फ़रमा थे, मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो सरकार अल्लाह हू मियाँ ने कुछ बातचीत फ़रमाने के बाद जेब से रुपया निकाल कर मुझे दिया और फ़रमाया कि जब तुम रोज़ा-ए-मुक़द्दसा पर हाज़िर होना तो अर्ज़ करना कि इस अब्दुल बसीर मियाँ की बूढ़ी दाढ़ी की लाज रखना और कहना कि मेरी सूरत का ध्यान रखना। चुनांचि हज ए बैतुल्लाह शरीफ़ से फ़ारिग़ होकर मैं मदीना -ए-मुनव्वरा हाज़िर हुआ लेकिन सरकार अल्लाह हू मियाँ का सलाम और आपका गुज़ारिश नामा पेश करना भूल गया। जब वापसी का वक़्त आया तो मैं रौज़ाए अक़दस के सामने सर झुकाए नज़राना-ए-सलाम पेश कर रहा था तो मैंने देखा कि सरकार अल्लाह हू मियाँ वहाँ मौजूद हैं और मुझे देखकर मुस्कुरा रहे हैं, फ़ौरन मुझे सरकार अल्लाह हू मियाँ का पैग़ाम याद आ गया और हस्बे हिदायत मैंने बारगाह-ए-रिसालत में अर्ज़ कर किया और जो रुपया सरकार अल्लाह हू मियाँ ने मुझे अता फ़रमाया था वह अब तक मेरे पास मौजूद है और मैं उसकी बरकत से माला-माल हो गया।

करामत (27): पीरज़ादा मुजद्दिदी मौलाना इश्तियाक़ अहमद साहब ख़लीफ़ा हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ फ़रमाते हैं कि एक बार सरकार अल्लाह हू मियाँ हम चन्द लोगों के साथ गांव गजरौला में हज़रत नौ गज़ा दरवेश अलैहिर्रहमा के मज़ार शरीफ़ पर तशरीफ़ ले गए, वहां रईस ए पीलीभीत के यहाँ ठहरे और जनाब अब्दुल अज़ीज़ खां खुद भी वहां मौजूद थे

लेकिन उन्होंने अपने ख़ादिमों से कहा कि सिर्फ़ दो आदमियों का ख़ाना तैयार करो। हम लोगों का कुछ ख़्याल न किया, उसी रात में अब्दुल अज़ीज़ ख़ान ने ख़्वाब देखा कि बुज़ुर्गों का एक जलसा है और वह भी वहां पहुंचे लेकिन यह कहकर उन्हें वहाँ से निकाल दिया कि आपने मौलाना साहब को ख़फ़ा कर दिया तो हमारे जलसे में मत बैठो! ख़्वाब से बेदार होकर रोते हुए हाज़िर हुए और कहा कि हमारी ख़ता माफ़ फ़रमा दीजिए हम से बड़ी ग़लती हुई आप हमारी दावत क़ुबूल फ़रमा लीजिए। आपने ख़ता माफ़ फ़रमा दी फिर वह हमेशा बहुत ताबेदार रहे और ता ज़िन्दगी अपने घर से खाना भेजते रहे।

करामत (28): मुंशी अब्दुल ग़फ़्फ़ार खां साहब रईस गांव पैटी बड़े अमीर आदमी थे और सरकार शाह जी मियाँ रज़ियल्लाहु अन्हु के मुरीद भी थे और बहुत खुश अक़ीदा थे। उन्होंने एक मुक़दमा सब-जजी पीलीभीत में दायर किया था और मुंशी करामतुल्लाह ख़ान उनके कारिंदे थे उन्होंने अपने कारिंदे साहब को सरकार अल्लाह हू मियाँ की ख़िदमत में भेजा और उनसे कहा कि तुम सरकार अल्लाह हू मियाँ से अर्ज़ करो, वह तुम्हारे पीर हैं और मेरे पीर भाई हैं वे बहुत बड़े बुज़ुर्ग हैं मेरे मुक़दमे के लिए दुआ करें और कुछ नज़राना भी दिया कि यह सरकार अल्लाह हू मियाँ को देना और कामयाबी पर इन्शा अल्लाह उनका हुजरा जो मस्जिद में मशरिक़ की तरफ़ बन रहा था उसे भी मैं बनवा दूंगा। तो हुज़ूर ने दुआ फ़रमाई और वह मुक़दमे में कामयाब हो गए लेकिन मुंशी अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ान अपने वादे को भूल गए। मुंशी करामत उल्लाह ख़ान ने खुद उनसे शायद एक या दो मरतबा अर्ज़ किया लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। जब मुंशी करामत उल्लाह ख़ान हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हुज़ूर ने फ़रमाया करामत उल्लाह ख़ान तुम हरगिज़ हरगिज़ उनसे न कहना, जब वह भूल गया तो भूल जाने दो अब तुम कुछ न कहना अगर कहोगे तो अच्छा नहीं होगा। चुनांचि फिर उन्होंने उन से कुछ न कहा। उसके चन्द दिन के बाद यह हुआ कि फ़रीक़े सानी ने यह अपील हाईकोर्ट में दायर की, वहां से मुक़दमा उनके खिलाफ़ हुआ और वह

मुक़दमा हार गए, कुछ दिन के बाद उनका इन्तेक़ाल हो गया और सारा कारोबार कुछ दिनों के बाद समाप्त हो गया।

करामत (29): दलील गंज के कुछ लोग जो सरकार अल्लाह हू मियाँ के मुरीद भी थे मगर बद अक़ीदा हो गए और बुज़ुर्गों की शान में बद कलामी करने लगे। जब सरकार अल्लाह हू मियाँ से उनके मुताअल्लिक़ अर्ज़ किया गया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि रंज मत करो ऐसे लोग दुनिया में हमेशा पैदा होते रहे हैं लेकिन अल्लाह तआला अपने ख़ास बंदों का खुद बदला ले लेता है हमें उनको बुरा कहने की ज़रूरत नहीं, जब वे लोग ज़्यादा हरकतें करने लगे और सरकार अल्लाह हू मियाँ की शान में भी गुस्ताखियाँ करने लगे तो एक दिन आप ने ज़र्ब लगाकर फ़रमाया कि वह दुनिया में हमेशा परेशान रहेंगे। एक शख़्स उनमें से हज ए बैतुल्लाह के लिए रवाना हुआ तो सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया कि इसके लिए मक्का शरीफ़ व मदीना शरीफ़ का दरवाज़ा बंद हो चुका है वह नहीं जा सकता। चुनांचि वह शख़्स रास्ते में ही मर गया और बाकी जो लोग यहाँ थे वे परेशान रहे। कुछ लोगों ने सरकार अल्लाह हू मियाँ की हयात में ही तौबा कर ली थी और कुछ ने बाद में सरकार ताजुल औलिया से माफ़ी तलब की तो उनके हालात बेहतर हुए।

करामत (30): जनाब अब्दुल करीम साकिन दलील गंज बयान करते हैं कि एक मुक़्दमा फ़ौजदारी, मारपीट का बनाम नेमतुल्लाह, करामतुल्लाह व अब्दुल ग़फ़्फ़ार और बदरुद्दीन व अहमद यार, और अयूज़ व नवाब वली व अब्दुल लतीफ़ दायर था जिसमें यह लोग बे गुनाह थे, सिर्फ़ दो लोगों से मामूली झगड़ा हुआ था और मामला झूठा बनाया गया था, पुलिस भी इन लोगों के खिलाफ़ थी, हर चन्द मफ़ाहमत की कोशिश की गई लेकिन सुलह नहीं हुई, क्योंकि महमूद यार खां खुद हज़रत शाह जी मियाँ से बैअत थे और उनकी लड़की भी सरकार अल्लाह हू मियाँ से बेअत थी और यह सब मुलज़िमान भी सरकार अल्लाह हू मियाँ से बैअत थे और सब लोग उनसे बहुत अक़ीदत रखते थे इसलिए सब लोग सरकार अल्लाह हू मियाँ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और सुलह के लिए अर्ज़ किया गया, हुज़ूरे वाला खुद मोज़ा दलीलगंज

तशरीफ़ ले गए और जुमला लोगों को जमा करके फ़रीक़ैन में रज़ामन्दी करा दी और सफ़ाई कराई और यह तय कर दिया कि राज़ी नामा अदालत में दाख़िल कर दो और मुझ अब्दुल करीम से फ़रमाया कि हम सभी की चाय की दावत इस खुशी में करदो तो ख़ान साहब महमूद यार खां मुद्दई से हर शख़्स ने माफ़ी मांगी और सबको माफ़ी दे दी । सुबह को सरकार अल्लाह हू मियाँ तशरीफ़ ले गए। मुद्दई मौसूफ़ से कहा गया कि चलकर रज़ामन्दी दाख़िल कर दो तो उन्होंने साफ़ इनकार कर दिया और कहा कि तुम लोगों को बिना सज़ा कराए हर गिज़ न छोड़ूंगा मैंने सरकार अल्लाह हू मियाँ की वजह से इक़रार कर लिया था। सभी मुलज़िमान मज़कूर जिन पर दावा था उन सब को लेकर खुद हजूर किबला की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सारा वाक़्या सुनाया, उस वक़्त हुजरा शरीफ़ में मौलवी हलीम गुल मियाँ भी तशरीफ़ रखते थे और मुहर्रम शरीफ़ का ज़माना था सारा वाक़्या सुनकर हुज़ूर ने बहुत अफ़सोस किया और मौलवी साहब मौसूफ़ से फ़रमाया कि इन सभी मुलज़िमान के लिये दुआ करें। चुनांचि उन्होंने भी दुआ की और सरकार अल्लाह हू मियाँ एक चादर सर पर डालकर कुछ देर मुनाक़्बा करके एक ज़रब अल्लाहू की लगाकर हम लोगों की तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि जाओ तुम सब लोग छूट गए तुम लोग बेख़ौफ़ होकर कचहरी जाओ हमसे हज़रत शाह जी मियाँ ने फ़रमा दिया कि तुम छूट गए और उसके बाद हम लोगों को बहुत खुशी से खिचड़ा खिलाया। हम सब लोग वहाँ से खुशी ख़शी कचहरी गए, खुदा के फ़ज़्ल-ओ-करम से और हुज़ूरे वाला की दुआ से सब मुलज़िमान मुक़्दमे से बरी होकर शाम को सरकार अल्लाह हू मियाँ की ख़िदमत में हाज़िर होकर क़दम बोस हुए।

करामत (31): शेख़ इनायतुल्लाह और मोहम्मद इब्राहीम मुहल्ला पंजाबियान की दुकान नगरपालिका की आराज़ी पर क़दीम कोतवाली से मुत्तसिल बाज़ार में थी उन को उस जगह से दुकान उठाए जाने का हुक्म दिया गया लेकिन तामील न करने पर कलेक्टर और कमिशनर साहिबान ने सख़्ती से हुक्म दिया। ये दोनों लोग सरकार अल्लाह हू मियाँ के पास आए और अर्ज़ किया कि अगर यह दुकान हट जाएगी तो हम कहाँ

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

जायेंगे? अगर यह दुकानें बच गई तो हम शाह जी मियाँ हुजूर की फ़ातिहा एक देग़ पकाकर करेंगे। आपने फ़रमाया कि हमने शाह जी मियाँ से अर्ज़ कर दिया है कि यह देग़ पकाएगें, उनकी दुकान क़ायम रहेगी। फिरे आपने हुक्म दिया कि जाओ खुदा के हुक्म से क़ायम रहेगी। चुनांचि बार बार हुक्काम की कोशिश होने पर भी दुकान उनकी क़ायम रही और उन्होंने 23 देग़ पकाकर दरगाह पर फ़ातिहा दिलाई।

करामत (32): गवर्नमेंट हाई स्कूल की इमारत की नई तामीर के लिए मोहल्ला मोहम्मद फ़ारूक़ उर्फ मुहल्ला मियाँ साहिब में एक आराज़ी मन्जूर हो गई थी, इस आराज़ी पर मोहल्ले के ग़रीब लोगों के मकानात बने थे उन्होंने अपनी इस परेशानी का इज़हार सरकार अल्लाह हू मियाँ की ख़िदमत में किया कि आप दुआ फ़रमा दें कि हमारे मकानात बच जाएं। आपने दुआ फरमाई और फ़रमाया कि जाओ तुम्हारे मकानात बिफ़ज़लिही तआला बच जाएंगें, आख़िर वैसा ही हुआ और इस आराज़ी का हुक्म मंसूख़ होकर दूसरी जगह इमारत तामीर की गई।

करामत (33): हाफ़िज़ मोहम्मद बख़्श लोहार शेरी साकिन पीलीभीत शरीफ़ किसी मसअले में परेशान थे कि ख़्वाब में अपने मुर्शिद सरकार शाह जी मियाँ को देखा और सरकार शाह जी मियाँ फ़रमाते हैं कि जाओ मौलवी अब्दुल बसीर मियाँ से मुलाकात करो वह अपने ज़माने के कुतुब हैं। हाफ़िज़ मोहम्मद बख़्श सरकार अल्लाह हू मियाँ की बारगाह में हाज़िर हुए और आपको ख़्वाब सुनाया। सरकार अल्लाह हू मियाँ उस ख़्वाबे को सुनकर अपने मुरशद की अता पर बहुत रोए।

करामत (34): सय्येदना सरकार अल्लाह हू मियाँ फ़रमाते थे कि जिस मुहल्ले का मुझे रात को ख़्याल आया करता था दिन में उस मुहल्ले के लोग आकर मेरे मुरीद हो जाते थे और यह भी फ़रमाते थे कि जिस शख़्स को मैं चाहता हूँ कि वह न आए वह मेरे पास नहीं आता है।

करामत (35): सरकार अल्लाह हू मियाँ के मुरीद मोहम्मद महबूब साकिन पेशावर हाथ और पांवों से माज़ूर हो गए, उनकी बीवी कुछ औरतें के साथ सरकार अल्लाह हू मियाँ की बारगाह में हाज़िर होईं तो आपने फ़रमाया कि

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

हम तुम्हारी गोद में लड़का देख रहे हैं। उस औरत ने कहा कि मेरा मर्द तो बीमार और बेकार है। आपने फ़रमाया कि वह अच्छा होगा और तुझे लड़का पैदा होगा, चुनांचि ऐसा ही हुआ और उनके यहाँ लड़का पैदा हुआ।

करामत (36): सय्यद हलीम गुल मियाँ की शादी गूजर गढ़ी में क़रार पाई थी लेकिन वहाँ से किसी वजह से इंकार हो गया था। सरकार अल्लाह हू मियाँ से अर्ज़ किया गया तो आपने फ़रमाया कि यह निसबत दूसरी जगह नहीं होगी तो लड़की की माँ खुद सरकार अल्लाह हू मियाँ की ख़िदमत में हाज़िर हुई और सय्यद हलीम गुल मियाँ के साथ तारीख़ शादी तय कर दी गई और शादी हुई।

करामत (37): हनीफ़ गुल मियाँ इमाम मस्जिद हुज़ूर सय्यद गुल बाबा मियाँ ने दो साल तक सरकार अल्लाह हू मियाँ से अर्ज़ किया कि मेरी शादी करा दी जाए मगर हुज़ूर ने कोई तवज्जो न फ़रमाई, एक रोज़ मियाँ के साथ खाना खा रहे थे और सरकार ताजुल औलिया भी मौजूद थे उन साहब ने फिर वही सवाल किया, हज़रत ने नाम लेकर फ़रमाया कि गोरी बीबी आजा, आजा, आजा, ये अल्फ़ाज़ ब तकरार फ़रमाये। तीसरे दिन एक निहायत ख़ूबसूरत खातून से उनका निकाह हो गया।

करामत (38): सय्यद गुलाम क़ादिर साहब को सूबा जेन से किसी बात पर पुलिस पकड़ कर पेशावर लाई और वह वहां की हवालात में एक महीने से ज़्यादा बंद रहे और हलीम गुल मियाँ साहब ने अर्ज़ किया कि पेशावर के मुतसर्रिफ़ ने परेशान किया तो मियाँ ने थूक दिया और फ़रमाया जा हमने उन्हें छुड़ा दिया तो वह फ़ौरन छूटकर तोरढ़ेर शरीफ़ आ गए।

करामत (39): पीलीभीत शरीफ़ में मौलाना कफ़ीलुर्रहमान साहब ईदगाह में नमाज़े ईद पढ़ा रहे थे और सरकार अल्लाह हू मियाँ अपने मुर्शिद सरकार शाह जी मियाँ के मज़ार पर थे क्योंकि आप नमाज़े ईद वहीं अदा फ़रमाते थे, अचानक सरकार अल्लाह हू मियाँ उठे और कहा ईदगाह चलो और फ़ौरन तेज़ सवारी से ईदगाह पहुँचे, वहाँ जाकर पता चला कि नमाज़ ईद में ग़लती हो चुकी है फिर आपने नमाज़ पढ़ाई और वोही सूरत पढ़ी जो पहले पढ़ी गई थी जिसमें ग़लती हो गई थी। लोगों को

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

तआज्जुब हुआ कि सरकार अल्लाह हो मियाँ को कैसे पता चला कि नमाज़े ईद में ग़लती हो गई है और किस वजह से हुई है?, जब आप से दर्याफ़्त किया गया तो आपने फ़रमाया कि सरकार शाह जी मियाँ ने मुझे यह हुक्म दिया था कि फ़ौरन ईदगाह पहुँचो और नमाज़े ईद पढ़ाओ।

करामत (40): उस्ताद निसार अहमद बरेलवी मुहल्ला गुलाब नगर सरकार शाह जी मियाँ के मुरीद थे और उनकी बीवी सरकार अल्लाह हू मियाँ की मुरीद थी। उनका हाथ रआशा के सबब बहुत काँपता था, वह अपने शौहर को लेकर सरकार अल्लाह हू मियाँ की बारगाह में हाज़िर हुईं और परेशानी अर्ज़ की, सरकार अल्लाह हू मियाँ ने उस पर दम डाला और बिफ़ज़्लिही तआला वह बिल्कुल सेहतयाब हो गए और मर्ज़ रआशा बिल्कुल दफ़ा हो गया।

करामत (41): जनाब शफ़िउल्लाह साहब नानकारी ख़ादिम सरकार अल्लाह हू मियाँ ब्यान करते हैं कि एक बार सरकार अल्लाह हू मियाँ हमारे घर तशरीफ़ लाए, हम उनको तरबूज़ ख़रबूज़े के खेत पर ले गये, वहां पर बारिश होने लगी, आपने अपने सरे मुबारक पर चादर रख ली, हम सब लोग बारिश में भीगते रहे और सरकार अल्लाह हू मियाँ पर एक बूंद भी नहीं आई।

करामत (42): जनाब शहर यार ख़ान मुहल्ला बाज़ोरी टोला बरेली बयान करते हैं कि सय्येदना हजूर हाफ़िज़ शाह जमालुल्लाह रामपुरी रज़ियल्लाहू अन्हु के मज़ारे अक़दस की कुनज़ियाँ उनके पास रहती थीं, रात को मज़ार शरीफ़ बंद करके वह अपने घर चले गए लेकिन सरकार अल्लाह हू मियाँ मज़ार शरीफ़ के अंदर रह गये, सुबह जब मैंने मज़ार शरीफ़ का दरवाज़ा खोला तो देखा कि सरकार अल्ला हू मियाँ के जिस्मे पाक का हर हिस्सा अलग अलग है, यह मंज़र देख कर मैं डर गया कि किसी ने सरकार को शहीद कर दिया। इससे पहले कि मैं शोर मचाता सरकार अल्लाह हू मियाँ ने मुझे आवाज़ दी, मैंने मुड़ कर देखा तो सरकार अल्लाह हू मियाँ सही सालिम जलवा अफ़रोज़ हैं, आपने मुझे अपने पास बुलाया और फ़रमाया कि हमारा राज़ किसी को मत बताना।

करामत (43): सय्यदना ताजुल औलिया कुतुबे ज़माँ वली-ए-कामिल हज़रत अल्लामा अल्हाज शाह सैयद मोहम्मद अब्दुल क़दीर मियाँ पीलीभीती

रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से आरिफे हक़ पीरे कामिल हज़रत अलहाज सूफ़ी एजाज़ मोहम्मद मियाँ क़दीरी रज़ियल्लाहु अन्हु नानकारा शरीफ़ ने बयान फ़रमाया कि एक बार सय्यदना हुज़ूर अल्लाह हू मियाँ रज़ियल्लाहु अन्हु बारगाह शेरी में हाज़िर थे और मुहर्रम का महीना था। पीलीभीत शरीफ़ में हमेशा से ताज़ियों की धूम रही है और ताज़ियादारी धूम धाम के साथ होती रही है, इसलिए सरकार शाह जी मियाँ ने सरकार अल्लाह हू मियाँ को हुक्म फ़रमाया कि मौलवी साहब जाइये और ताज़ियों की ज़ियारत कर आइए। सरकार अल्लाह हू मियाँ तशरीफ़ ले गए और तवक़्क़ो से ज़्यादा वक़्त ताज़ियों की ज़ियारत में मशग़ूल रहे। जब लौटे तो सरकार शाह जी मियाँ ने फ़रमाया मौलवी साहब! हमने आपको ताज़ियों की ज़ियारत को भेजा था मगर आप बहुत वक़्त के बाद वापस आए हो क्या बात है? सरकार अल्लाह हू मियाँ ने अर्ज़ किया हुज़ूर! आपने सिर्फ़ ताज़ियों की ज़ियारत का हुक्म फ़रमाया था लेकिन जब मैं वहां पहुंचा तो देखा कि वहाँ सय्येदैना हसनैन ए करीमैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा जलवागर थे और उन्हीं के जलवो में खोया रहा और इतना वक़्त गुज़र गया।

यह वाक़्या हज़रत आरिफ़े हक़ की मौजूदगी में 14 मुहर्रम1426 हिजरी को उर्स क़दीरी के अज़ीमुश्शान इजलास में सय्येदना अमीर अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत हुज़ूर मुनाज़िरे आज़म अल्लामा हाफिज़ क़ारी मुफ़्ती सैय्यद मोहम्मद इंतेख़ाब हुसैन क़दीरी अशरफ़ी मदारी, मुतरज्जुम व मुफ़स्सिर मुहद्दिस मुरादाबादी रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान भी फ़रमाया।

करामत (44): सरकार अल्लाह हू मियाँ पीलीभीती रज़ियल्लाहु अन्हु की हयाते मुबारका मसलके सय्यदना इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की तरवीजो इशाअत में बसर हुई, यही वजह है कि आप ने अपने वक़्त में कई मसाइल पर ज़बरदस्त जिद्दोजहद फ़रमाई और बिफ़ज़्लिही तआला व बिकरमे हबीबेहिल आला अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़तहो ज़फ़र ने आपके क़दम चूमे। चुनांचि आपके दौर में मसला ए अज़ाने सानी ने काफ़ी तूल पकड़ा, सरकार अल्लाह हू मियाँ अज़ाने सानी जुमा दाख़िले मस्जिद के क़ायल थे जैसा कि तमाम औलियाए किराम का मामूल रहा है,

लेकिन इस दौर में कुछ लोग इस अज़ाने सानी को ख़ारिजे मस्जिद कहलवाना चाहते थे। इसलिए जब पीलीभीत शरीफ़ में मौलाना वसी अहमद सूरती ने इस मुआमले को तूल दिया तो सरकार अल्लाह हू मियाँ ने उनकी मुख़ालफ़त फ़रमाई और बात कोर्ट तक जा पहुंची। जज ने कहा कि इस मसले का फ़ैसला जुमे को जामा मस्जिद ही में किया जाएगा। चुनांचि जुमे के दिन क़ब्ले नमाज़े जुमा, जज ने एलान किया कि जो लोग अज़ाने सानी दाख़िले मस्जिद चाहते हैं वे अंदर चले जाएं और जो बाहर चाहते हैं वह यहीं रह जाएं, तो सबसे पहले सरकार अल्लाह हू मियाँ ने एक ज़रबे अल्लाहू लगाई और मस्जिद के अंदर तशरीफ़ ले गये, सरकार अल्लाह हू मियाँ का मस्जिद में अन्दर जाना था कि सभी नमाज़ी आपके पीछे पीछे मस्जिद के अंदर पहुंच गए और मुहद्दिस सूरती अपने दो हिमाइतियों के साथ देखते ही रह गए। जज ने एक नज़र भर के मुहद्दिस सूरती को देखा और एलान कर दिया कि मामूल की तरह अज़ाने सानी जुमा दाख़िले मस्जिद ही होगी (अज़ाने सानी का फ़िक़्ही हुक्म- पेज13)

इरशादाते आलिया सरकार अल्लाह हू मियाँ

◆ सय्येदना सरकार अल्लाह हू मियाँ इरशाद फ़रमाते हैं कि सय्येदना सरकार शाह जी मियाँ हुज़ूर से मैंने अर्ज़ किया कि लोग ताज़ीम करते हैं, हाथ चूमते हैं, नफ़्स दुश्मन है ऐसा न हो कि दिल में गुरुर व तकब्बुर लाए और धोखे में डाले। सरकार शाह जी मियाँ ने फ़रमाया कि किस लिए यह ख़्याल करते हो बल्कि यह ख़्याल करो कि अल्लाह तआला ने हमारे ऊपर अपना नाम "अल्लाहू अल्लाहू" आसान फ़रमाया तो वह अपने नामे मुबारक की ताज़ीम कराता है न कि तुम्हारी। और अगर किसी शख़्स ने रियाकारी से इबादत की है तो वह इबादत उसके चेहरे पर लौटा दी जाती है और क़्यामत के दिन हुक्म होता है कि जिस की इबादत की है उससे जाकर मज़दूरी लो यह इबादत हमारी नहीं है।

◆ सय्येदना सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया, मख़लूक़ के साथ इख़तेलात कम करो क्योंकि मख़लूक़ से इख़तेलात में तीन नुक़सान हैं! अव्वल : तुम्हारे और खुदा के दरमयान जो राज़ होगा वह बे अख़्तेयार

ज़बान से निकल जाएगा और यह सिर्रे ख़फ़ी ख़ुदा के दरमियान है, बयान नहीं करना चाहिए क्योंकि बयान से यह राज़ बंद हो जाता है। दूसरा यह कि इख़तेलाते मख़लूक़ में अक्सर ज़ईफ़ी आ जाती है। तीसराः उसकी याद में ग़फ़लत आती है। ज़िक्र-ओ-फ़िक्र मुश्किल हो जाता है।

◆ बुलन्द दरजात, सआदत मन्दी ज़िल्लते नफ़्स और रियाज़त के साथ हासिल होते हैं। हिलाज़ा इब्राहीम अदहम बल्ख के बादशाह थे, सलतनत छोड़ कर अपने नफ़्स को ज़लील किया और फ़क़्र-ओ-फ़ाक़ा इख़्तेयार करके बड़ा मर्तबा हासिल किया ।

◆ फ़रमाया कि मुरीद को चाहिए कि पीर के तरीक़े पर रहे अगरचे रफ़्तार चींटी की हो तो वह पीराने इज़ाम की मंज़िले मक़सूद को पहुँच जाएगा और जिसने रफ़्तार भी छोड़ दी वह ख़सारा उठाएगा।

◆ फ़रमाया कि चींटी अगर कबूतर के पैर में फंस जाती तो जब कबूतर परवाज़ करता है तो चींटी भी परवाज़ करती है। इसी तरह से मुरीद पीर के साथ एक रंग रहता है तो मंज़िले मक़सूद को पहुँच जाता है।

सरकार शाह जी मियाँ रज़ियल्लाहु अन्हु का मकूला है कि :-

एक नज़र खुश गुज़रा दो नज़र गया गुज़रा

मुरीद को चाहिए कि कमालात देखने में न पड़े। मिसाल के तौर- एक शख़्स जो बाद नमाज़ अस्र एक चौराहे पर चलते चलते तमाशा कर रहा है या किसी के साथ खड़ा हो गया तो मग़रिब वहाँ हो गई, मंज़िले मक़सूद को नहीं पहुंचा इसलिए ख़ुदा की ज़ात ु क़सूद है और कमालात देखना तमाशा बेनी है बल्कि जो सीधे जा रहा है और तमाशा आदि में नहीं पड़ा तो मंज़िले मक़सूद को पहुंच जाएगा।

◆ फ़रमाया कि दो बातें अपने ऊपर लाज़िम जाने-अव्वलः दुनिया से बेरक़बती। दूसरे-क़ते तूल नफ़सी उम्मीद दराज़ क्योंकि दुनिया से रग़बत वसूल इलल्लाह में नुक़सान का बाइस है और तूल नफ़सी से अमल में कमी आती है और यह नुक़सान का बाइस है। जो सांस बीत गई वह वापस नहीं आती, आइंदा की सांस का भरोसा कि आए न आए और वह सांस लेने को ग़नीमत समझे और ज़िक्र-ओ-फिक्र में मशगूल रहे

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

क्योंकि हर सांस रहमत है और नेमत पर शुक्र वाजिब है और शुक्र यह है कि कोई सांस ज़िक्र से ख़ाली न जाए।

◆ फ़रमाया कि अपने पीर को हिक़ारत की नज़र से न देखे क्योंकि मुरीद नुक़सान में पड़ जाएगा और फ़ैज़ से महरूम रहेगा अगरचे राई के दाने के बराबर भी हिक़ारत हो बल्कि यह ऐतेक़ाद करे कि हमारा पीर हमारे हक़ में अपने ज़माने में सबसे ज़्यादा कामिल है, चुनांचे दो आदमी तलोशे पीर व मुर्शिद में फिर रहे थ, क बोला जिसके पास मख़लूक़ ज़्यादा जमा हो वह हमारा पीर है तो बाज़ार में हीजड़े के पास मख़लूक़ ज़्यादा जमा थी उसको पीर मान लिया और उसके पीछे फिरता था, उस हीजड़े ने उससे पूछा कि क्यों मेरे पीछे फिरते हो? तो यह बोला कि मैंने तुझे अपना पीर मान लिया है तो हीजड़े ने कहा कि मैं पीरी मुरीदी के क़ाबिल नहीं हूँ। आख़िर उस ने उसे नहीं छोड़ा और हीजड़े ने उसे हुक्म दिया कि जाओ जंगल में अल्लाह अल्लाह करो। वह चला गया और जंगल में अल्लाह-अल्लाह करने लगा तो खुदा की तरफ़ से हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम को हुक्म हुआ कि यह शख़्स अपने एतेक़ाद में सच्चा है उसे तवज्जोह देकर कमाल को पहुंचा दो चुनांचि वह कमाल को पहुंचा। तो उसने देखा कि हीजड़े में कमाल नहीं है तो उसने दुआ की जिसकी बरकत से मुझे कमाल हासिल हुआ। उसे भी कमाल दे, वह हीजड़ा भी उनकी दुआ से कामिल हो गया और दूसरे शख़्स ने कहा था कि जिसने मुझे पकड़ लिया वह मेरा पीर है। बेरी के झाड़ के बयाबान जंगल ने उसको पकड़ लिया तो यह उससे न छूट सका तो वहीं बैठकर अल्लाह-अल्लाह करने लगा। उसी को अपना पीर एतेक़ाद कर लिया। अरसे दराज़ के बाद वह झाड़ आंधी से उड़ गया, वह भी उसके पीछे दौड़ता रहा यहां तक कि वे झाड़ दरया में गिर गया। यह भी गिरने को था तो हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम को हुक्म हुआ उस को पकड़ लो और तवज्जो देकर कमाल को पहुंचा दो चुनांचि उसे भी कमाल बख़्शा गया।

◆ फ़रमाया मुरीद अपने पीर के साथ ऐसी मुहब्बत करे जैसी मुहब्बत एक आशिक़ को अपने महबूब के साथ होती है बल्कि उससे भी ज़्यादा मुहब्बत हो। एक दिन सरकार शाह जी मियाँ ने फ़रमाया कि मौलवी साहब

आप इश्क़ हासिल करो! सरकार अल्लाह हू मियाँ ने अर्ज़ किया कि पीर बूढ़े हैं और इश्क मिज़ाजी नहीं है तो मुहब्बत किस तरह हासिल होगी? सरकार शाह जी मियाँ ने फ़रमाया कि लाओ अपना हाथ हमारे हाथ के साथ साथ मिला दो। जब हाथ मिला तो गर्मी पैदा हुई तो सरकार शाह जी मियाँ ने फ़रमाया ऐसे ही अपने पीर के क़ल्ब के साथ अपना क़ल्ब तसव्वुर में रगड़े तो यह गर्मी और इश्क़ पैदा हा जायेगा। जैसा कि बांस की दो लकड़ियों को रगड़ने से आग पैदा होती है तो मुझे सरकार शाह जी मियाँ से इतनी मुहब्बत हो गई कि हर चीज़ में शाह जी मियाँ ही नज़र आने लगे।

◆ सरकारअल्लाह हू मियाँ ने फरमाया कि एक रोज़ मेरे दिल में यह ख़्याल आया कि अगर सरकार शाह जी मियाँ अपनी पीठ मुबारक बरहना करते तो मैं पीठ मल कर ख़िदमत करता और रूहानी तसल्ली हासिल करता, फ़ौरन शाह जी मियाँ ने अपनी बंडी उतार दी और मुझसे फ़रमाया कि हमारी पीठ मलो, मैं हज़रत की पीठ मलने को हाथ लगाए तो दिल में ख़्याल वहदत का आया और इस ज़ात में वही तजल्लियात नज़र आये कि एक चीख़ अल्लाहू की मेरे मुंह से निकली और मैं बेहोश हो गया। जब होश में आया तो सरकार शाह जी मियाँ ने फ़रमाया कि तुमसे बर्दाश्त नहीं हो सकी। मरीद को चाहिए कि गम के जाम पी जाते हैं लेकिन रहते हैं होश्यार।

◆ सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया कि पीर ओ मुर्शिद के ख़लीफ़ा को अपना पीर समझना चाहिए क्योंकि जो चीज़ पीर के पास है वह ख़लीफ़ा को दी गई है तो ख़लीफ़ा को पीर न समझेगा तो फ़ैज़ से महरूम रहेगा। सरकार अल्लाह हू मियाँ सरकार शाह जी मियाँ के मुरीदों को पीर की तरह समझते और अपने मुरीदों को पीर भाई और अपने आप को दोनों के बीच का वसीला।

(फ़ाएदा) यह मख़लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत और नफ़्सकुशी की ऊंची मंजिल है।

◆ फ़रमाया कि पीरे कामिल नज़ा की हालत में मुरीद के पास तशरीफ़ ले जाते हैं और शैतान लईन से बचा देते हैं। उस वक़्त पीर की शक्ल में शैतान नहीं हो सकता और न रसूले अकरम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सूरत मुबारक में।

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

◆ फ़रमाया कि मुरीद को चाहिए कि यह कभी ख़्याल न करे कि सिलसिला ए आलिया में दाख़िल हुआ और इस का समरा ज़ाहिर नहीं हुआ। इसका समरा अव्वल तो दुनिया में ज़ाहिर होगा अगर नहीं तो जाँकनी के वक़्त ज़ाहिर होता है और समरा-ए-सानी कब्र और हश्र में। हुज़ूर शाह जी मियाँ ने फ़रमाया था कि बन्दे को बन्दगी करना चाहिए, मिलने न मिलने के चक्कर में न रहे।

◆ हुज़ूर शाह जी मियाँ ने सरकार अल्लाह हू मियाँ से पूछा कि क्या हाल है? फ़रमाया, जब अल्लाह-अल्लाह करता हूँ मजा आता है और जी खुश होता है और जब अल्लाह अल्लाह में मजा नहीं आता है तो जी खुश नहीं होता है तो फ़रमाया कि मज़े का बन्दा नहीं होना चाहिए बल्कि खुदा का बन्दा होना चाहिए। खुदा के रास्ते में ना मज़ा है न ग़ैर मज़ा बन्दे को बंदगी करना है।

◆ एक दिन सरकार शाह जी मियाँ ने अज़राहे शफ़्क़त कान पर हाथ रख कर उठाते बिठाते हुए कहा मौलवी साहब क्या नक्शे हैं, क्या बहार है, क्या हाल है? तो मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर की दुआ है तो हाथ फ़ौरन दूर कर दिऐ और फ़रमाया कि दुआयें तो लोग दुश्मन के वास्ते भी करते हैं, जो जिसका हो गया उसको दुआ से क्या काम, उसको खुद उसका ख़्याल रहता है।

◆ मुरीद को चाहिए कि तसव्वुर पीर का करे। अगर तसवीर साफ़ न नज़र आए तो पीर के कपड़ों को देखे अगर तब भी समझ न आए तो पीर के मकान का तसव्वुर करे। इस तरह तसव्वुर पुख़्ता होने पर फ़ना फिश्शेख़ के मरतबे को पहुंच जाएगा और हर चीज़ में पीर ही में नज़र आयेगा।

◆ फ़रमाया कि पीर-ओ-मुर्शिद ने हम पर मशक़्क़त और मुजाहिदा डाला और अव्वल अव्व्ल कुछ अर्से तक अपने पास रखा और खाने पीने और लिबास की चीजें जो आती थीं वह औरों को दे दिया करते थे और मुझे अक्सर फ़ाक़े से रखते थे और सब काम ख़िदमत के मुझे करने होते थे, अगर खाना बच गया तो खा लिया अगर नहीं बचा तो सब्र किया और नफ़्स को भी तसल्ली देते रहे। पीर हकीमे हाज़िक की तरह है। मरीज़ के मर्ज़ के मुताबिक़ इलाज करता है।

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

◆ फ़रमाया कि मुरीद हमेशा मुतवक्किल रहे, सख़्ती, तकलीफ़, राहत सब क़िसमत से है।

◆ फ़रमाया कि दुनिया में किसी एक जगह पाबन्दी व दिलबस्तगी न करना चाहिए क्योंकि इससे जुदाई फ़िर शाक गुज़रेगी और इससे अज़कार और अशग़ाल में भी नुक़सान होगा। हमेशा यादे हक़ और तसव्वुरे शेख़ में रहे। असली मक़सद फौत न हो जाए और यही दरजा फ़ना फ़िल्लाह का है।

◆ फ़रमाया किसी काम का इरादा करे तो ख़ुदा के वास्ते नियत सही करके करे कि मैं ख़ुदा के वास्ते करता हूँ। मख़लूक़ हमारे शर से महफ़ूज़ रहे और हम मख़लूक़ के शर से महफ़ूज रहें।

◆ फ़रमाया कि रिया और तकब्बुर और ख़ुदी से ख़ुद को महफ़ूज़ रखे क्योंकि एक दुरवेश पहले हमेशा पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ा करते थे। एक रोज़ इत्तेफ़ाक़न आख़री सफ़ में नमाज़ पढ़ी। दिल में ख़्याल हुआ कि लोग कहेंगे कि शेख आख़िर में नमाज़ पढ़ रहा है। इस ख़्याल के आते ही आपने नमाज़ तोड़ दी और फिर शुरू की और फ़रमाया कि यह रियाकारी है और रियाकार की नमाज़ क़ुबूल नहीं, फिर फ़रमाया कि मुरीद को चाहिए कि चार चीजों से परहेज़ करे ताकि कमाल को पहुंचे। अव्वल मस्जिद का मुल्ला न बने (यानी मस्जिद को कमाई ज़रियाए न समझे) दूसरा ज़ियारत का मुजाविर न बने (यानी मज़ार को पेट भरने का ज़रिया न समझे) क्योंकि इसमें उनकी निगाह दौलत पर रहती है और यह फ़कीर के ख़िलाफ़ है। तीसरा छोटे बच्चों को न पढ़ाए। अगर उन्हें पढ़ाएगा और वह न पढ़ेंगे तो उन्हें मारेगा तो दिल में सख़्ती पैदा होगी। सख़्ती से स्याही पैदा होगी तो यह फ़कीर के खिलाफ़ है। चौथा किसी से तमा (लालच) न करे और न दिल में तमा का ख़्याल करे क्योंकि तमा के अलफ़ाज़ नुक़ते से ख़ाली हैं तो यह भी खाली रह जाएगा।

◆ फ़रमाया कि वसूले इलल्लाह के लिए दो चीज़े हैं! अव्वल ग़िज़ा कम ख़ाना। बक़दरे ज़रूरत खाना। दूसरा ना'महरम की तरफ़ न देखना क्योंकि ना महरम को देखने से ग़ैर की ख़्वाइश पैदा होती है और दस्त अंदाज़ी की नौबत आती है और शैतान को मौक़ा मिलता है गुनाह करवाने का और

थोड़ा ख़ाने से हिकमत और अनवार इलाही तारी होते हैं और ना महरम को न देखने में तीन फ़वाईद हासिल होते हैं। अव्वल सलाहियते आमाल, दूसरा तहारते क़ल्ब, तीसरा तकसीरुल ख़ैर। ना महरम की तरफ़ देखने से चार आफ़तें लाज़िम आती हैं। अव्वल हुज़ूरे क़ल्ब फ़ौत हो जाता है, दोयम ख़तराते शैतानी ज़्यादा होते हैं, सोयम ज़िक्र ओ फ़िक्र से ग़फ़लत हो जाती है। चहारुम शैतान ग़लबा कर लेता है, क़ल्ब पर हावी हो जाता है। हमेशा इन बातों से बचता रहे और अपने पीर के तसव्वुर की फ़िक्र करता रहे।

◆ फ़०रमाया कि मुरीद को चाहिए कि निगाहे ग़ैर से बचा रहे, नमाज़ क़ज़ा न करे, झूठ न बोले हालांकि अपना नुकसान ही क्यों न हो, दुश्मन के लिये बद-दुआ भी न करे, सब्र करने से या तो उसको हिदायत मिल जाती है या फिर अल्लाह खुद उसको सज़ा देता है।

◆ फ़रमाया कि जो मुक़द्दर में होता है वह होकर रहता है। जब वक़्त आ जाता है तो उसका सामान बन जाता है। औलाद होना मुक़द्दर में है तो शादी हो जाती है। पहले इस ख़्याल में वक़्त जाए नहीं करना चाहिए बल्कि अल्लाह-अल्लाह करना चाहिए फ़िर फ़रमाया जिसने हुसूले दुनिया के वास्ते दुनिया दार को सलाम किया तो उसके ईमान का तीसरा हिस्सा चला जाता है। जो काम करे खुदा के लिये करे।

◆ सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया कि हम ने पीर व मुर्शिद की ख़िदमत की और सरकार शाह जी मियाँ की वालिदा साहिबा के गुंबद शरीफ़ बनाने के लिये अपने सिर पर टोकरी ढ़ोई लेकिन यह काम हम शौक़ से करते थे। एक रोज़ गर्मी में 11 बारह बजे एक शख़्स मट्टी खोदता था और डलिया लाता था और लू ज़्यादा थी पसीने से गुबार बदन पर जम गया था, सरकार शाह जी मियाँ ने जब यह मंज़र देखा तो मुझ से फ़रमाया कि मौलवी साहब आप डलिया ढोते हैं? मैंने रो कर अर्ज़ किया कि अल्लाह पाक मुझे इस क़ाबिल बना दे, आप मुस्कुराए और मुझ पर नज़र डाली तो मुझे उस डलिया की और अपनी जान की ख़बर नहीं रही और पीर की एक निगाह काफ़ी हो गई।

◆ फ़रमाया कि कोई चीज़ तोहफ़े में तुम्हें कोई दे तो ले लेना, वापस

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

न करना, अगरचि दुश्मन की जानिब से हो। अगर खुद न खाओ दूसरे को दे दो क्योंकि वो नहीं दे सकता है खुदा देता है।

◆ फ़रमाया रिज़्के हलाल दो चीज़ों से होता है। अव्वल तो पल्लेदारी की मज़दूरी से या बिना मांगे कोई चीज़ मिले और बाक़ी माल में शक रहता है।

◆ फ़रमाया काहिली नहीं करना चाहिए और रिज़्के हलाल हासिल करना चाहिए चुनांचि सय्येदना हुज़ूर हाफ़िज़ शाह जमालुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु अपने पीर और मुर्शिद सय्येदना हुज़ूर हज़रत सय्यद कुतुबुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में रहे और बारह साल पल्लादारी की' मज़दूरी की, खुद भी खाया और पीर को भी खिलाया।

◆ फ़रमाया कि एक बुढ़िया ने मन्नत मानी थी कि अगर हमारा फ़लाँ काम हो गया तो फ़लाँ चीज़ किसी मोहताज को दूंगी। काम होने के बाद मोहताज को तलाश किया गया मगर बाज़ार में कोई मोहताज नहीं मिला। सब अपना काम कर रहे थे। आख़िर मजबूर होकर वापस आई तो देखती है कि एक मकान में एक रईस साहब बैठे हैं सब काम नौकर के हाथ से करा रहे हैं। कभी कहते हैं कि नौकर हाथ धुलाओ, खाना खिलाओ, कपड़े पहनवाओ। यह हाल देख कर वह बढ़िया हाज़िर हुई और हाथ जोड़कर अर्ज़ करने लगी कि अगर हुज़ूर ये चीज़ कुबूल फ़रमा लें तो बेहतर है। क्योंकि मैं मोहताज के लिए मन्नत मानी थी और आप से ज़्यादा कोई मोहताज नहीं देखा। वह रईस शर्मिंदा हुए। इंसान को चाहिए कि ऐसी काहिली इख़्तेयार न करे। हलाल कमाकर खुद भी खाए और दूसरों को भी खिलाए।

◆ एक देहाती आदमी एक पीर साहब के पास आया, मुरीद हुआ। पीर ने हुक्म दिया कि खुरपी लेकर ब ्ीचे में घास खोदो, पानी पिलाओ। कुछ दिन काम किया तो हाथो । छा ़ ड़ गए। पीर के पास आया और हाथ जोड़कर अर्ज़ किया कि बाबा जी जो दूसरों को काम का हुक्म करता है उसका क्या नाम है और काम करने वाले का क्या नाम है? फ़रमाया हुक्म करने वाला 'गुरु जी' होता है और काम करने वाला 'बालका' होता है। हाथ जोड़कर कहने लगा कि गुरु जी बनाइये बालके न बनाइये। पीर ने

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

कहा कि जब बालका नहीं बनेगा तब गुरू जी कैसे बनेगा?।

◆ किसी शख़्स ने हुज़ूर क़िबला से पूछा कि हुज़ूर आप सिलसिले में हर एक को दाख़िल फ़रमा रहे हैं इसका मक़सद क्या है? हुज़ूर ने फ़रमाया कि मक़सद सह है कि इसमें कोई शख़्स ऐसा हो कि दर्जा-ए-कमाल को पहुंचे जिस से सिलसिला क़ायम रहे और आख़िर में नजात का सबब बने। और ग़ाफ़िल को मालिक के साथ लगा देने में रज़ामंदी ख़ुदा की है ताकि यह नमते कुबरा सलामत रहे। हमारा मक़सूद जाह-ओ-जलाल नहीं है। फिर फ़रमाया उमूर में पैरवी पीर की करे। बातों में, खाने-पीने में, नमाज़ में। चुनांचि मकतोबात शरीफ़ में सय्यदना हुज़ूर मुजद्दिद अलफ़े सानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि पीर का तसव्वुर ख़ुद पर ग़ालिब करे, हर काम पर भी नज़र करे, कि मैं नहीं करता हूँ बल्कि मेरे पीर कर रहे हैं। फिर फ़रमाया करामत का तालिब न हो कि यह हिस्सा मुनकिरीन का है फिर फ़रमाया कि महब्बत पीर की ग़ालिब करे क्योंकि बग़ैर फ़नाहियते पीर के फ़नाहियते रसूले ख़ुदा नहीं। फिर फ़रमाया अगर बिना ज़रिए मोहम्मद शेर की सूरत के ख़ुदा ए पाक का जमाले अक़दस देखा जाए तो मैं न देखूंगा। जब तक कि मोहम्मद शेर की सूरत न होगी। क्योंकि क़यामत के रोज़ दीदारे जमाले अक़दस बसूरत अपने माशूक के होगा और मेरा माशूक़ मोहम्मद शेर है मैं उनसे अलहदगी पसंद नहीं करता। मुझे ख़ुदा और रसूल की मारफ़त मोहम्मद शेर के वसीले से हासिल हुई है। चुनांचि एक बार प्यारे नामी क़व्वाल सरकार शाह जी मियाँ के रौज़ा-ए-अक़दस पर यह शेर पढ़ रहे थे । जब यह शेर गाया-

आरज़ू हुए दफ़ने तैयबा दर दिलस्त
ता शवम दर हश्र हम पहलू ए तो

तो सरकार अल्लाह हू मियाँ पर दो घंटे वज्द-ओ-हाल तारी रहा। जब वज्द कम हुआ तो अपनी पगड़ी मुबारक प्यारे क़व्वाल को इनाम में दे दी तो आप की वह ख़्वाहिश अल्लाह तआला ने पूरी फ़रमा दी और आपका रौज़ा -ए-पाक पीलीभीत शरीफ़ में पीर ओ मुर्शिद सरकार शाह जी मोहम्मद शेर मियाँ के क़रीब में बना।

सामने अपनी अपनी निगाहों के रखा है आपको
कितना मुर्शिद को है प्यार तुमसे अल्लाह हू मियाँ
(हुजूर मुजद्दिद मुरादाबादी)

◆ फ़रमाया कि पीर के तसब्वुर से दिल में नूर पैदा होता है। उस नूर से चार मक़ाम खुलते हैं। अव्वल मक़ामे नासूत, दोम मक़ामे मलकूत, सोम मक़ामे जबरूत, चहारुम मक़ामे ला यमूत। मुरीद को चाहिए कि तालिबे कश्फ़ व करामत न हो बल्कि पीर की सूरत को हर वक़्त मन में रखे। अगर रास्ते में कोई चीज़ कश्फ व करामत से ज़ाहिर हो तो तवज्जो न करे और इसी सूरते मुबारक के ज़रिये से ये चारों मक़ामात ज़ाहिर हो जाते हैं।

◆ एक शख़्स आया और इल्मे जफ़र की मालूमात करने लगा तो सरकार अल्लाह हू मियाँ ने फ़रमाया कि हमें पीर की सूरते मुबारक और अल्लाह का नाम काफ़ी है, मुझे किसी अमलयात की हाजत नहीं। हुज़ूर ने फ़रमाया तसव्वुरे शेख़ से दिल को रगड़ने से इश्क़ ओ हरारत पैदा होती है, जैसा कि दो पत्थरों के मिलने से आग पैदा होती है इसी तरह दो सूखे बांस की लकड़ियों के मिलने से आग पैदा होती है।

◆ फ़रमाया कि एक लकड़ी की नोक ज़मीन में गाडने से गढ़ा या सुराख़ पैदा होता है, इसी तरह दिल पर तसव्वुरे पीर को मलने से तमाम इश्क पैदा होता है। बिला ज़िक्र ओ फिक्र और तसव्वुफ़ के हरगिज़ कामयाबी नहीं हो सकती फिर फ़रमाया कि मक़सूदे असली हुज़ूरी से जिस्मानी और रूहानी दोनों मुराद हों तो बेहतर है और अगर एक भी हो तो काफ़ी है। बिल्कुल न हो तो हलाकत है।

◆ फ़रमाया मुरीद अपने बाल बच्चों के साथ बैठा हो और हुज़ूरी ज़िक्र के साथ हो वह बेहतर है बनिस्बत इसके कि तनहाई में हो, जंगल में हो बग़ैर हुज़ूरी के। बस मक़सूद गोशा नशीनी से हुज़ूरी ए दिली है।

◆ एक दिन सरकार अल्लाह हू मियाँ तौरढेर शरीफ़ में बवक़्ते मग़रिब अपने ख़ाना-ए-आलिया पर जलवा फ़रमाते थे और सरकार क़िबला-ए-आलम वग़ैरह बच्चे मियाँ के पास लेटे हुए थे, इन बच्चों को लिटाए हुए प्यार कर रहे थे। फ़रमाया कि सय्यद अब्दुल क़दीर मियाँ

देखो हम बच्चों के साथ लगे हुए हैं लेकिन हम ऐसी हुज़ूरी में हैं कि हम नहीं हैं, खुदा बाकी है। अगर हम जंगल में होते और यह हुज़ूरी न होती तो उस जंगल से क्या फ़ायदा? बस चाहिए कि तसव्वुरे पीर के सिवा दूसरा तसव्वुर नेक और बद का हिजाब है। फिर फ़रमाया मुरीद को चाहिए कि अपने पीर से हुसने एतेक़ाद के साथ इश्क ओ मुहब्बत रखे कि मेरा पीर अपने ज़माने में सबसे अफ़ज़ल है। पीर की किसी चीज़ को मकरूह न जाने। अगर राई के दाने के बराबर एतराज़ का ख़्याल आया तो गुमराह हो जाएगा। पीर के दयार' अइज़्ज़ा व अक़रिबा वग़ैरह सब को अज़ीज़ जाने जैसा कि मजनू को सगे लैला अज़ीज़ था। हज़रत याफ़ई रज़ियल्लाहु अन्हु अपने उस्ताद के चार साला लड़के को देखकर ताज़ीम के लिए खड़े हो जाते थे। एक रोज़ किसी वजह से खड़े नहीं हुए उसने जाकर माँ से कहा कि सफ़ेद रीश आदमी मेरी ख़ातिर करता था अब खड़ा नहीं होता है। उसको उसकी माँ ने बद दुआ दी और वह हमेशा दर बदर रहा। चुनांचि दो शख़्स एक पीर के मुरीद थे उसमें एक मौलवी और एक जाहिल था। एक दिन वह मौलवी पीर साहब से झगड़ा करने लगा कि तुम जाहिल से मुहब्बत करते हो हम से नहीं। पीर न हुक्म दिया कि मौलवी साहब छत पर ऊंट है उसे उतार लाओ! वह हुज्जत करने लगा क्या ऊंट ऊपर चढ़ सकता है? वह अक़्ल में नहीं आता। पीर ने जाहिल को हुक्म दिया वह फौरन चढ़ा मगर ऊंट न पाया, परेशान रो रहा था यहाँ तक कि छोटे छोटे सुराख़ में तलाश किया, पीर ने उसे बुला कर रोने का सबब पूछा वह बोला कि पीर सच्चा है लेकिन मेरी आँख इसके लायक नहीं कि उसे पा सके या देख सके। पीर ने मौलवी से कहा कि देखो यह हमें सच्चा जानता है तुम नहीं जानते। यह रास्ता फ़ैज का हक़ीक़त है वरना हलाकत।

चुनांचि एक मुरीद ने हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया कि यह फ़रमान ठीक नहीं है ख़िलाफ़त शरीअत है कि "पीर के हर हुक्म को पूरा करो चाहे वोह तुमहें गलत ही लगे" शेख साहब उस पर गुस्सा हुए और फ़रमाया कि फ़लां जगह

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

एक रंडी है जाकर उसके साथ फेल करो वरना वापस मत आओ, यह मुरीद नहीं गया, पीर थोड़ी देर बाहर जाकर वापस आए फिर गुस्सा किया और हुक्म दिया कि जाओ उस रंडी के पास, यह मुरीद फिर भी नहीं गया तो नाराज़ होकर पीर साहब ने कहा कि अगर काफ़िर नहीं हो तो हमारा हुक्म बजा लाओ। जब यह मुरीद वहाँ पहुँचा तो वहाँ एक बुढ़िया से मुलाकात हुई और उस बुढ़िया ने उसके हमबिस्तर होने के लिए एक लड़की का इंतेज़ाम किया। जब यह मुरीद इस लड़की के पास पहुंचा तो वह लड़की रोने लगी तो उसने सबब पूछा, वह बोली आज तक हमसे ज़िना नहीं हुआ। फ़लां तारीख़ में शादी हुई थी फिर हमारा क़ाफ़िला लुट गया था, आदमी भाग गए थे हमसे चोरों ने ज़ेवर छीनकर इस शहर में छोड़ दिया। अब तक इस बुढ़िया के पास रहे। अब यह कहती है कि जिना करके कमाई खाओ अब हम नहीं खिला सकते। आज पहली नौबत है। इस मुरीद ने तारीख़ मिलाई तो वह उसी की बीवी निकली। दोनों मिलकर खुशी से हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी के पास हाज़िर हुए और इस फरमान का मतलब समझ में आया कि "पीर के हर हुक्म को पूरा करो चाहे वोह तुमहें गलत ही लगे" ।

◆ फ़रमाया कि सय्यदना हुज़ूर साबिरे पाक क्लयरी रज़ियल्लाहु अन्हु के पीर ओ मुर्शिद के उर्स की तारीख़ थी। अस्र की नमाज़ के बाद हुज़ूर शम्सुद्दीन तुर्की पानीपती रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसरार किया कि पीर का उर्स है कुछ फ़ातिहा की जाए तो हुज़ूर साबिर पाक ने फ़रमाया कि कुछ है? तलाश किया तो 6 दाम की कौड़ी मिलीं, फ़रमाया कि गुड़ का रस लाओ और गूलड़ भी हाज़िर करो और फिर फ़ातिहा हुई। उसी वक़्त सय्यदना हुज़ूर निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही रज़ियल्लाहु अन्हु भी दिल्ली में फ़ातिहा दे रहे थे और आपने ज़बरदस्त शीरनी का इन्तेज़ाम किया हुआ था, फ़ातिहा में वक़्त ज़्यादा लगा और मग़रिब की नमाज़ में देरी हो गई, मुरीदों ने अर्ज़ किया कि आज फ़ातिहा में देर क्यों लगी? हुज़ूर निज़ामुद्दीन औलिया ने फ़रमाया कि हमारे भाइ अलाउद्दीन साबिर ने 6 दाम की शीरनी पर फ़ातिहा दिलाई है और हमारे मुर्शद बाबा फ़रीद गंजे शकर और

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

सभी बुजुगाने सिलसिला रज़ियल्लाहु अन्हुम वहाँ जलवागर थे, जब हज़राते सिलसिला वहाँ से फ़ारिग़ होकर यहाँ तशरीफ़ लाए तो हम ने फ़ातिहा दलाई, लिहाज़ा थोड़ी देर का ख़्याल न करो बल्कि मुहब्बत शर्त है और फ़ातिहा दिलाई जाए। फिर फ़रमाया कि ज़िक्र करने के वास्ते जब मुरीद बैठे तो रू बा-क़िबला बैठे और दरूद शरीफ, . फ़ातिहा शरीफ़, सूराए इख़लास शरीफ़ वगैरह पढ़कर अपने बुजुर्गों की रूहों को सवाब पहुँचाए। उसके बाद जिस दम के साथ एक सांस में सौ बार से पांच सौ बार तक सांस रोक कर जर्बे लगाए। पीर की सूरत में एक ही जगह तसव्वुर करे जो चमकता हुआ नज़र आये। रोज़ाना कम से कम पच्चीस हज़ार मर्तबा होना ज़रूरी है। अगर तरक़्क़ी कर सके तो खूब है, इसी तरीक़े से मुराक़बा एक ही जगह पीर की सूरत में सांस अल्लाहू के साथ रोककर रखे जब थक जाए तो हू के साथ छोड़ दे। गर्ज़ यह है कि पीर की सूरत के सिवा और कोई दूसरी चीज़ तसव्वुर में न आए।

सरकार शाह जी मियाँ ने फ़रमाया कि अपने को सबसे छोटा समझे और कभी तकब्बुर न करे, जो शख़्स उम्र में बड़ा हो तो उसके लिए यह ख़्याल करे कि यह ज़मानाए रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब है तो इबादत खूब की होगी इसलिए हम से बेहतर है और जो शख़्स हमउम्र हो तो समझे कि यह इबादत हमसे छुप कर करता है इसलिए हमसे बेहतर है और जो शख़्स छोटा हो उससे अपने को कम समझे कि उसके गुनाह मुझसे कम है इसलिए यह मेरे लिए अच्छा है, और अपने अमल को काफ़िर से भी कम समझे कि शायद यह तौबा करे और ईमान लाये और आक़बत बख़ैर हो जावे हमारी आक़बत हमें मालून नहीं हमारी नादानी से कैसी हो? ।

◆ फ़रमाया कि सय्यदना हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ हुआ कि सब्र वाला फ़क़ीर अफ़ज़ल है कि शुक्र करने वालर मालदार? फ़रमाया कि शाकिर दोनों में बेहतर है कियूंकि फ़क़ीरी एक नेअमत है कि शुक्र उस पर करे न कि बला है कि उस पर सब्र करे।

हिकायातुस्सालेहीन में है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

फ़रमाया कि बेशक हमारी उम्मत में चालीस 40 अबदाल हर ज़माने में मौजूद रहेंगे। 22 शाम में 18 इराक़ में। जब एक फ़ौत हुआ दूसरा क़ायम हुआ यह सिलसिला क़यामत तक जारी रहेगा। जब जिसका वक़्त आया सब चले जाएंगे, हज़रत सुल्तान बा यज़ीद बुस्तामी ने हज से आते वक़्त एक गुलाम, एक दासी ख़रीदी, गुलाम से कहा कि मूली वग़ैरह ख़रीदकर शहर के दरवाजे पर बैठ जाना और जब हम आ जायें तो तुझ से बिला पूछे मूली लेकर खा जाऐं। तब तू हमको बुरा भला कहना और लौंडी से कहा कि तुम फलां दुकान पर बैठी रहना और जब हम तुमसे बग़लगीर होंगे तो तुम हमको बुरा भला कहना। चुनांचि जब आप शहर में दाख़िल हुए तो सुल्ताने वक़्त और हजोरों लोग आपके इस्तक़बाल को आए। जब आप शहर के दरवाज़े पर पहुँचे तो हस्बे प्रोग्राम गुलाम से बिना इज़ाज़त मूली लेकर खाई तो गुलाम ने आपको बुरा भला कहा, अवाम भड़क गई, फ़िर जब आप दुकान पर पहुंचे जहां बांदी को बिठाया था तो बांदी से बग़लगीर होकर उसका बोसा लिया तो इस्तक़बाल करने वालों में एक शख़्स भी बाक़ी न रहा और सब भाग गए, वह माहे रमज़ान था तो आपने ग़ुलाम और लौंडी को आज़ाद किया। साठ लोगों को खाना खिलाया, दो महीने के रोज़े रखे। कफ़्फ़ारा पूरा हुआ और नफ़्स से कहा बस यह क़दर तुम्हारी थी मख़लूक़ में। फिर आप दरया किनारे तशरीफ़ ले गए और इबादत में मसरूफ़ हो गये। जब लोगों ने बांदी और ग़ुलाम से पूछा तो पता चला कि वह गुलाम भी अपना था और बांदी भी। यह शान है ओलिया की कि अपने नफ़्स को ज़लील करके इबादते इलाही के वास्ते लोगों से पीछा छुड़ाते हैं। एक पीर ने बारह बजे शब में एक तरंज मुरीद से मांगा वह मौसम तरंज का न था वह गया कहीं पता न चला। आख़िर रोने लगा, रोने से औरतें और मर्द जाग गये, उसने पीर के वास्ते तरंज मांगा, लोगों ने कहा कि यह तरंज का मौसम नहीं है मुरीद ने कहा कि हमारा पीर सच्चा है ज़रूर होगा, आख़िर में एक औरत निकली और कहा कि पुराना तरंज हमारे घर में है, वह लाई और पीर को दे दिया। हज़रत बा यज़ीद बुस्तामी रजियअल्लाहु अन्हु ने 22 साल सय्यदना हुज़ूर इमामे जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु की ख़िदमत की मगर कमाल को नहीं पहुंचे, सुबह के वक़्त घर के दरवाज़े पर वालिद रोकर फ़रमाते हैं कि खुदा मुसाफिर बच्चे को पहुँचा दे। आपने दस्तक दी। पूछा–कौन है? अर्ज़ किया–मुसाफिर बच्चा, खुश हुए, गले लगाया। फिर कुछ वक़्त रहे। मां बीमार हुईं, पानी न था बारह बजे रात पानी के लिए गए। माँ सो रही थीं क़रीब सुबह तक पानी लिए हुए आप वालिदा के सरहाने खड़े रहे जब आंख खुली पानी मांगा आपने पेश किया। वालिदा ने पुछा कि क्या रात भर यहीं खड़े रहे? आपने अर्ज़ किया कि हाँ यह ख़्याल था कि आप जागेंगी और मैं हाज़िर न हुआ तो बाइसे तकलीफ़ होगा, वालिदा ने खुश होकर दुआ दी कि इलाही बा'यज़ीद जो चाहता है कमाल दे दे। तो आपको फ़ौरन वह कमाल हासिल हुआ। खुशनूदी-ए-वालदैन, खुशनूदी-ए-खुदा और खुशनूदी-ए-रसूल व पीर का सबब है ।

◆ एक रोज़ सरकार अल्लाह हू मियाँ ने सरकार ताजुल औलिया से फ़रमाया कि तुम बहुत सआदत मंद हो और तुम ने हमारी बहुत ख़िदमत की है। इस पर सरकार ताजुल औलिया ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मेरी क्या ताक़त थी कि मैं ख़िदमत करता, यह तो आप का करम है कि आपने मुझसे ख़िदमत ली है। तो सरकार अल्लाह हू मियाँ यह सुनकर खुश हुए और फ़रमाया कि कुछ मांगना चाहो तो मांग लो! यह सुनकर सरकार ताजुल औलिया पर रिक़्क़अत तारी हो गई और अर्ज़ किया हुज़ूर आपने बिना मांगे सब कुछ अता फ़रमाया है इसलिए अपने लिए कुछ नहीं चाहिये बस एक अर्ज़ है कि दुनिया और आख़िरत में मेरे मुरीदों की लाज रहे, सरकार अल्लाह हू मियाँ ने इतना सुना तो आप पर वज्द तारी हो गया और फ़रमाया कि दुनिया में कब्र और हश्र में तुम्हारे मुरीदों की लाज रहेगी। सरकार अल्लाह हो मियाँ इरशाद फ़रमाते हैं कि मुरीद को चाहिए कि चिल्लाकशी का इरादा करे तो नीयत दुरुस्त करके करे और यह ख़्याल करे कि मैं सब कुछ खुदा के लिए करता हूँ और गोशा नशीनी इसलिए करता हूं ताकि मख़लूक़ मेरे शर से बची रहे।

नारा ए बसीरत या अललाह हू मियाँ

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

विसाले पाक हुजूर अल्लाह हू मियाँ रज़ियल्लाहु अन्हु

यह एक हक़ीक़त है कि अल्लाह वालों को वह सब भी नज़र आता है जो एक आम मुसलमान की नज़रों से पोशीदा रहता है और उन्हें यह भी पता चल जाता है कि उनकी रब तआला से मुलाक़ात का वक़्त क्या है और कब उनको इस फ़ानी दुनिया को ख़ैर बाद कहना है।

चुनांचि सरकार अल्लाह हू मियाँ के विसाल शरीफ़ से पहले भी इस क़िस्म के वाक़्यात जुहूर में आए जिससे यह ज़ाहिर होने लगा था कि अब आपका विसाल शरीफ़ क़रीब है। इससे मुताअल्लिक़ चन्द रिवायात यहाँ तहरीर करने की सआदत हासिल करता हूँ ।

◆ 29 शाबान 1343 हिजरी को सरकार अल्लाह हू मियाँ जब पीलीभीत शरीफ़ से तोरढ़ेर शरीफ़ पहुंचे तो आपने फ़रमाया इस मर्तबा तो हम रमज़ान शरीफ़ वतन में गुज़ारेंगे लेकिन इस के बाद आइन्दा रमज़ान शरीफ़ के बारे में नूर बख्श बरेलवी की दरख़्वास्त है कि उनके भतीजे हाफ़िज़ मोहम्मद आज़म पहली मर्तबा मस्जिद में कलामे पाक सुनायेंगे और इसमें आपकी शिरकत ज़रूरी है लेकिन हमने उनसे कोई वादा नहीं किया, खुदा जाने आइंदा साल खुदा को क्या मंजूर है जिसके मुक़द्दर में होगा वह सुनेगा, चुनांचि वैसा ही ज़हूर में आया और इसी साल आपके विसाल शरीफ़ के बाद हाफ़िज़ मोहम्मद आज़म का कुर'आन सरकार ताजुल औलिया ने समाअत फ़रमाया।

◆ सरकार अल्लाह हू मियाँ ने अपनी उम्र के आख़री साल जहांगीर रोड करांची में सरकार ताजुल औलिया और मौलवी हलीम गुल मियाँ साहब से फ़रमाया कि तुम दोनों इस बार उर्स शरीफ़ में पीलीभीत शरीफ़ ज़रूर आना। चंनांचि मौलाना साहब तशरीफ़ ले गए और सय्यद हलीम गुल मियाँ साहब किसी वजह से न जा सके। पीलीभीत में मौलाना साहब को किताब "जवाहरे मारफ़त' की तकमील का काम सुपुर्द किया गया और इसी दौरान हुजरा-ए-मुबारक में बैठ कर यह फ़रमाया कि अब हमारी वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया है तो हमें इसी हुजरे में ऐसे ऐसे करके लिटा देना क्योंकि हमने इस हुजरे में खदाए पाक और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

और पीराने इज़ाम की तरफ़ से बहुत कुछ देखा जो क़ाबिले बयान नहीं है चुनांचि उसी हुजरे में मज़ारे मुबारक बनाया गया।

◆ सरकार अल्लाह हू मियाँ के पास से आख़री मर्तबा हज़रत मौलाना हलीम गुल साहब और सरकार ताजुल औलिया तोरढ़ेर शरीफ़ तशरीफ़ ले जा रहे थे। आपने अपने नूरे नज़र सरकार ताजुल औलिया को इस बार ख़िलाफ़े मामूल गले से चिपटा लिया और फ़रमाया कि हमने तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द कर दिया, गोया यह इशारा था कि यह हमारी आख़री मुलाक़ात है। रूकसत के वक़्त मौलाना साहब से यह भी फ़रमाया कि तुम रामपुर में हज़रात के मज़ारात पर हाज़री ज़रूर देना और सरहिन्द शरीफ़ भी हाज़िर होना। जब हज़रत मौलाना साहब वतन पहुंचे तो आपने ख़्वाब देखा कि एक पुख़्ता सड़क पर सरकार अल्लाह हू मियाँ जा रहे हैं और मैं दौड़ा हुआ जा रहा हूँ। रास्ते में लोगों का हुजूम जमा है, वे कह रहे हैं कि अगर वली खुदा का देखना चाहो तो यह अल्लाह हू मियाँ अल्लाह के वली हैं। हज़रत मौलाना फ़रमाते हैं कि जब हम थक गए तो सरकार अल्लाह हू मियाँ रुके और मेरे पहुंचने पर फ़रमाया कि अब तुम वुज़ू कर लो हम तुम्हारे मुनतज़िर हैं, यहां नमाज़ इकट्ठा पढ़ेंगे चुनांचि नमाज़ इकट्ठा पढ़ी। यह इशारा तसर्रुफात सुपुर्द करने का था। मुहर्रम 1344 हिजरी में आप रामपुर तशरीफ़ ले गए और करीब डेढ़ माह क़याम रहा। कई लोग बेअत से मुशर्रफ़ हुए और 'जवाहरे मारफ़त' दोबारा प्रकाशित हुई। माहे रबीउल अव्वल शरीफ़ 1344 हिजरी में आप रामपुर से सरहिन्द शरीफ़ तशरीफ़ ले गए और ख़्याल यह था कि अगर हमको हुजूर मुजद्दिद पाक से इजाज़त मिल जाए तो तोरढ़ेर शरीफ़ जाएँ लेकिन इजाज़त नहीं हुई। क्लयर शरीफ़ वापस तशरीफ़ लाए और तीन घंटे मज़ार शरीफ़ के मग़रबी हुजरे में पर्दा डालकर मराक़बे में बैठे रहे। गुलाम रसूल शाह साहब का बयान है कि जब आप बाहर आए तो आप पर ग़श तारी था फिर आप मुरादाबाद तशरीफ़ ले गए। मुरादाबाद में मौलवी हमेश गुल मियाँ साहब से फ़रमाया कि अब हम अपने वतन जाएंगे। हमारे पास अब वक़्त नहीं रहा है। जब रामपुर तशरीफ़ लाए तो

वहाँ जो कोई मिला उससे यही कहा कि अब यह आख़री मुलाक़ात है। हम वतन जाएंगे अब मुलाक़ात नहीं हो सकती, फ़िर भटपुरा शरीफ़ तशरीफ़ ले गए वहां से पीलीभीत शरीफ़ आए। लोगों ने महसूस किया कि अपका चेहरा मुबारक और ज़्यादा रौशन हो गया है। फ़िर आप अलील हो गए, तीन चार दिन बुख़ार आया, फ़िर कुछ कम हुआ और उसके बाद फिर से शदीद बुख़ार आ गया, इस बार लोगों ने ज़ोर दिया कि आपके साहबज़ादे साहब को तार दिया जाए लेकिन आपने इनकार फ़रमाया कहा कि सब लोग परेशान होकर यहां आ जाएगें। मंगल के रोज़ से आप ने लोगों से बातचीत करना कम कर दिया, बुध्द के रोज़ आप पर तजल्लियाते इलाही की बेहोशी तारी थी, हाज़रीने वक़्त का बयान है कि क़ल्बे मुबारक के पास हाथ ले जाने पर सख़्त गर्मी महसूस होती थी इसी बीच किसी ने दवा मुंह में डाली आपने उसे थूक दिया। हर चन्द लोग बात करते थे मगर आपने किसी बात का जवाब नहीं दिया। आख़िर जुमेरात के रोज़ 26 रबीउल अव्वल शरीफ़ 1344 दिन में एक बजकर पचास मिनट पर अपने हज़ारों मुरीदों और लाखों चाहने वालों को रोता सिसकता छोड़कर वासिल इलल्लाह हुए।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

27 रबीउल अव्वल शरीफ़ जुमा को हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान साहब अलैहिर्रहमा ने आपको गुस्ल दिया और आपके पीर भाई आरिफ़ बिल्लाह हज़रत मौलाना मोहम्मद बशीर मियाँ बरेलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। नमाज़े जनाज़ा और जुलूस जनाज़ा में अवाम का कैसा हुजूम था यह बयान से बाहर है, हर तरफ़ बस सर ही सर नज़र आते थे। नमाज़े जनाज़ा के बाद सरकार अल्लाह हू मियाँ का जनाज़ा ए मुबारका अपने पीर और मुर्शिद सरकार शाह जी मियाँ के मज़ारे पाक पर लाया गया। रास्ते भर मीलाद ख़्वाँ हज़रात मीलाद शरीफ़ पढ़ते रहे और फिर एक नूहा दरबार शाह जी मियाँ में पढ़कर सुनाया क्योंकि सरकार शाह जी मियाँ का दोलारा और खलीफ़ा-ए-आज़म आज आख़िरी बार अपने मुर्शद की बारगाह में हाज़री दे रहा था। लोगों का रो-रोकर बुरा हाल था। हर तरफ़ से आह ओ

बुका की आवाज़ थीं। सरकार शाह जी मियाँ के दरबार से ख़ख़रा होते हुए जनाज़ा-ए-मुबारक मोहल्ला मोहम्मद वासिल आपके हुजरा-ए-पाक तक लाया गया। उसी हुजरा-ए-मुबारक में जिस में आप इबादत व रियाज़त फ़रमाते थे हस्बे इरशाद आपकी तुरबते मुबारक बनाई गई।

सरकार ताजुल औलिया फ़रमाते हैं कि सरकार अल्लाह हू मियाँ के विसाल शरीफ़ से पहले हमने वतन में यह ख़्वाब देखा था कि सरकार ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु ... के दरबार में हम और एक साहब और सरकार अल्लाह हू मियाँ के मुरीद व ख़लीफ़ा हाज़िर हैं। सरकार ग़ौस पाक ने मुझसे फ़रमाया कि तुम्हारे मुताअल्लिक़ काम सुपुर्द हो गया है। तीसरे दिन सरकार शाह जी मियाँ की ख़िदमत में वही मुरीद और हम हाज़िर हुए, हज़रत शाह जी मियाँ ने मेरी तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि अब हम बहुत ज़ईफ़ हो गए हैं, उसके बाद दो तार एक के बाद दूसरा सरकार अल्लाह हो मियाँ की बीमारी और विसाल के मौसूल हुए जिसको देखकर वतन में एक हश्र पैदा हो गया। उसी दिन सरकार ताजुल औलिया मौलाना सय्यद हलीम गुल मियाँ साहब, गुलाम रसूल शाह साहब बरेलवी जो वहाँ मौजूद थे, वतन से रवाना हो गए और तीसरे दिन पीलीभीत शरीफ़ पहुंच कर सोयम में शरीक हुए। सोयम की फ़ातिहा में हज़ारों मुरीदीन, मोहिब्बीन और मोतक़ेदीन के दर्मियान बा'इत्तेफ़ाके राय सरकार ताजुल औलिया की दस्तार बन्दी अमल में आई और सज्जादा नशीन बनाए गए। जनाब नूर बख़्श साहब बरेलवी व अन्य लोगों ने मौलाना सय्यद हलीम गुल मियाँ साहब के हाथों में दस्तार पेश की, उन्हों ने हज़रत बन्ने मियाँ साहब अलैहिर्रहमा के हाथों में दस्तार दी और हज़रत बन्ने मियाँ साहब और हज़रत गुलाम रसूल शाह साहब ने मिलकर दस्तार बांधी। मौलाना हमेश गुल व मौलाना हलीम गुल साहिबान व तमाम हाज़रीने जलसा ने इत्तेफ़ाक़ फ़रमा कर दस्तार व सज्जादा नशीनी की रस्म अदा की। सोयम के बाद सरकार ताजुल औलिया ने हज़रत हलीम गुल मियाँ साहब और दीगर साथियों के साथ-रामपुर में हज़रात के मज़ारात पर हाज़री दी और इन हज़रात से सरकार ताजुल

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

औलया को पीलीभीत शरीफ़ में क़्याम फरमाने का हुक्म सादिर हुआ।

हालाते मस्जिद अल्लाह हू मियाँ व ख़ानक़ाहे अल्लाह हू मियाँ व हालात तामीरे गुंबद शरीफ़

सरकार अल्लाह हू मियाँ, मुरीद होने के दो साल बाद तक मुहल्ला पंजाबियान और सरकार शाह जी मियाँ साहब की ख़िदमत में रहे। उसके बाद सरकार शाह जी मियाँ के हुक्म से अपने क़्याम इस मस्जिद मोहल्ला वासिल में हुआ, जब माहे ज़ीक़ादा 1308 हिजरी मुताबिक़ जून 1981 ई० में यहां तशरीफ़ लाए उस वक़्त इस मस्जिद की यह कैफ़ियत थी कि सिर्फ़ एक कमरा कड़ियों का और एक कोठरी थी जो चिमगादड़ों का मसकन बन चुकी थी, जिन्नात का जबरदस्त असर था। मग़रिब के बाद या दोपहर में किसी को घुसने नहीं देते थे, डराते थे और ईंटें फेंकते थे। इसलिए जब आप वहां तशरीफ़ ले गए तो आपको भी बहुत तकलीफ़ दी गई लेकिन आप इस्तक़लाल व इस्तेक़ामत के साथ वहां डटे रहे और ज़िक्र ओ फ़िक्र में मसरूफ़ रहे और इतना अल्लाह का ज़िक्र फ़रमाया कि वह जिन्नात भी आपके साथ ज़िक्र में शामिल होकर आपके फ़रमाँबरदार हो गए और फिर आपके हुक्म से वह जिन्नात मस्जिद को ख़ाली करके चले गए। उसके बाद आपने मस्जिद की कड़ियां हटा कर गर्डर डलवाये, फ़र्श पुख़्ता कराया, टीन का सायबान बनवाया, हुजरे और गुस्ल ख़ाने बनवाए और जो कुछ ज़रूरी काम उसमे समझा गया किया गया। इस मस्जिद में आपका क़्याम सरकार शाह जी मियाँ के हयात में 18 साल रहा और 20 साल सरकार शाहजी मियाँ के विसाल शरीफ़ के बाद रहा। जिस हुजरे में आप मुक़ीम थे उसी में आपके फ़रमान के मुताबिक़ आपका मज़ारे मुबारक बनाया गया।

उसके बाद रोज़ा-ए-मुबारका की तामीर का काम शुरू हुआ और सरकार ताजुल औलिया ने एक बड़ी आराज़ी मज़ार शरीफ़ के क़रीब ख़रीदी और उस पर ख़ानक़ाह शरीफ़ तामीर करायी, इसी सिलसिले में गुंबद शरीफ़ की तामीर का आग़ाज़ 12 सितंबर 1391 ई० को हुआ और भारी रक़म से यह गुम्बद बन कर तैयार हो गया।

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

सैयदना सरकार शाह जी मियाँ की पेशन गोई जो तामीर गुम्बद शरीफ़ से मुताअल्लिक़ है उसका तज़करा भी ज़रूरी है कि सरकार शाह जी मियाँ ने शाह वली चौधरी वल्द बन्ने चौधरी वग़ैरह साकिनान मुहल्ला वासिल की मौजूदगी में इरशाद फ़रमाया था कि मौलवी साहब को मुस्तक़िल तौर पर आराम और इत्मेनान के साथ रखना और उनके मज़ार का एक बहुत बड़ा गुंबद वहाँ बनाया जाएगा। सरकार शाह जी मियाँ साहब की यह पेशनगोई उस वक़्त की है जब तामीरे गुंबद शरीफ़ का कोई ख़्याल भी नहीं था। इसी सिलसिले में यह बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि सरकार अल्लाह हू मियाँ की हयाते ज़ाहिरी में आपकी बहनों ने तोरढ़ेर शरीफ़ में यह अर्ज़ किया था कि आप वक़्ते विसाल तोरढ़ेर शरीफ रहते तो अच्छा होता, आपने जोश में आकर फ़रमाया नहीं नहीं! हमको पीलीभीत शरीफ में रहना होगा और शाह जी मियाँ हुज़ूर ने फ़रमाया कि मौलवी साहब का बड़ा गुंबद बनेगा। चुनांचि दो बार सरकार अल्लाह हो मियाँ का गुंबद सरकार शाह जी मियाँ के गुंबद से छोटा बनाया गया मगर हर बार गिर गया, उसके बाद बड़ा गुंबद शरीफ़ बनाया गया तो बना रहा।

अल्लाह तआला और उसके प्यारे हबीब का करम है कि आज २४ अगस्त 2017 को यह किताब मुकम्मल हुई।

अल्लाह तआला अपने प्यारे हबीब अलैहिस्सलातो वस्सलाम के तुफ़ल मेरी इस काविश को कुबूल फ़रमाये।

सगे करबारे सरकार अल्लाहू हू मियाँ

सय्यद मोहम्मद इन्तेसाब हुसैन

क़दीरी अशरफ़ी मदारी

सदरः मरकज़े अहले सुन्नत अलजामिअतुल क़दीरिया

पीलीभीत शरीफ़

सज्जादानशीनः आसताना ए क़दीरिया हुजूर मुजद्दिद मुरादाबादी

मोहतमिमः मरकज़े अहले सुन्नत जामिआ क़दीरिया

मुरादाबाद शरीफ़

all india mission mojaddid moradabadi [malegaon maharastra]

عرس سیدنا حضور مجدد مراد آبادی

سیدنا امیر اہلسنت مجدد دین وملت حضور مناظر اعظم غوث زماں علامہ مفتی شاہ امام سید محمد انتخاب حسین قدیری اشرفی مداری مترجم ومفسر ومحدث مراد آبادی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا عرس مبارک 5 / 6 / 7 شوال کو آستانہ عالیہ قدیریہ حضور مجدد مراد آبادی، محلہ نئی بستی، مراد آباد شریف میں سیدنا شیر اہلسنت حضور خطیب اعظم وارثِ علوم حضور مجدد مراد آبادی مفتی سید محمد انتساب حسین قدیری اشرفی مداری سجادہ نشین آستانہ عالیہ قدیریہ حضور مجدد مراد آبادی کی زیر سرپرستی منعقد ہوگا، جس میں پہلے دن بعد نماز عشاء نعتیہ منقبتی مشاعرہ، دوسرے دن بعد نماز عشاء محفل سماع اور تیسرے، دن بعد نماز ظہر چادری جلوس، بعد نماز عصر خاص قل شریف اور بعد نماز عشاء حضور مجدد دین وملت کانفرنس منعقد ہوگی.

بشرط استطاعت ہر مرید کی اس میں شرکت ضروری ہے۔

الداعی: سید محمد احتساب حسین قدیری (ولیعہد ونائب سجادہ نشین)

مرکز اہلسنت جامعہ قدیریہ مراد آباد شریف

سیدنا امیر اہلسنت مجدد دین وملت حضور مناظر اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قائم فرمایا ہوا عظیم تعلیمی ادارہ ہے جہاں مکمل دینی تعلیم کا انتظام ہے۔ طلبہ کے کھانے رہنے اور علاج کا بھی اہتمام ادارے کی جانب سے کیا جاتا ہے۔ رمضان مبارک میں زکوۃ وفطرہ، عید اضحیٰ کے موقع پر چرم قربانی سے و دیگر مواقع اسکی مالی امداد فرما کر اجر عظیم حاصل فرمائیں۔

اپیل کردہ: سید محمد احتساب حسین قدیری (ناظم اعلیٰ)

حضور مجدد مراد آبادی رضی اللہ تعالی عنہ کے قلم کا عظیم شاہکار

ترجمہ قرآن کریم **بصیرۃ الایمان** (اردو و ہندی)

تفسیر قدیری بدیعی مع فوائد رشیدیہ

لفظی ترجمہ اور وہ بھی سلاست کی بقا کیساتھ۔ ہر آیت کریمہ کی الگ تفسیر۔ زبان انتہائی آسان کہ ہر پڑھنے والا بآسانی سمجھ سکے۔ ہر سنی مسلمان کے گھر میں اس ترجمے و تفسیر کا ہونا بہت ضروری ہے۔ صفحات:1592۔ ہدیہ:400/

سنی حنفی احادیث کریمہ پر مشتمل تاریخی عظیم الشان کتاب

جامع مداری شریف مع ترجمہ بصیرۃ العرفان وتشریحات قدیری

سیدنا امیر اہلسنت مجدد دین وملت حضور مناظر اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی معرکۃ الاراء تصنیف ہے جسمیں چھ ہزار احادیث کریمہ مع اعراب وحوالہ جات ہیں ہر سنی حنفی کے گھر میں اس کتاب کا ہونا ضروری ہے۔

آل انڈیا مشن حضور مجدد مراد آبادی مالیگاؤں مہاراشٹر

سیدنا وارث علوم حضور مجدد مراد آبادی حضور خطیب اعظم قبلہ کی سرپرستی میں آل انڈیا مشن حضور مجدد مراد آبادی سیدنا امیر اہلسنت مجدد دین وملت حضور مناظر اعظم رضی اللہ عنہ کی تصانیف مبارکہ اور خانقاہی پیغام کو دنیا بھر میں پھیلانے کا عزم مصمم لئے ہوئے ہے۔ آپ بھی آل انڈیا مشن حضور مجدد مراد آبادی کے ممبر بنکر سنیت کی اس عظیم خدمت کا حصہ بنیں۔

7020121316 Telegram Group Whats app Group 9158429915